A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 5जुलाई , 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 273, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

बादल का पेड़...

प्रकृति के रंग कितने मनोहर हैं! हिमाचल प्रदेश की खूबसूरती का एक दृश्य। फोटो - गिरीश शर्मा

सुप्रभात

चाहता तो हवा का बहना
देख सकता था
आकाश की नीलिमा
जिसमें पक्षी उड़ते थे
उनका उड़ना देख सकता था
फूलों के भांत भांत के रंगों
और उनकी गन्धों को
आंखों में,
फेफड़ों में भर सकता था
जीवन समृद्ध कर सकता था
वृक्षों का झूमना खड़े रहना निस्तब्ध
छाया फैलाना
नदियों का बहना निहार सकता था
बच्चों के साथ खेल सकता था उन्हें डांटने के बजाय
पत्नी को प्यार कर सकता था
हड़बड़ी में नहीं तसल्ली से
तल्लीनता से
किताबें पढ़ सकता था मन पसंद
कुछ न कुछ रहस्य
बचा हुआ था सब में

पर मैं दौड़ता था
कबाड़ इकठ्ठा करता
कोहनियां छिल जाती थीं
घुटने फूट जाते थे
लहू बहता था नाक से
पर मैं दौड़ता था गिरता था
फिर दौड़ता था

अंत समय में मैंने पाया
जो कुछ भी मैंने जुटाया
वह मेरे किसी काम का नहीं था।

- विनोद पदरज

भारी बारिश
महाराष्ट्र-गुजरात पानी-पानी

● महाराष्ट्र के भिवंडी में 3 फीट पानी भरा,दुकानें बंद ● गुजरात में भीषण बाढ़,उन्नीस लोगों का रेस्क्यू किया ● उज्जैन में युवक बहा,जम्मू व कश्मीर में लैंडस्लाइड

नई दिल्ली/भोपाल (एजेंसी)। मानसून देश के लगभग सभी राज्यों में पहुंच चुका है। राजस्थान-गुजरात के कुछ हिस्से बाकी हैं, हालांकि उससे पहले गुजरात में बारिश के चलते बाढ़ जैसी स्थिति बन गई है। गुजरात के मेंडरडा इलाके में समधियाला गांव के पास बाढ़ के पानी में चार गाड़ियां फंस गईं। जिसमें से 19 लोगों का रेस्क्यू किया गया। उधर महाराष्ट्र के भिवंडी में बाजार में करीब 3 फीट तक पानी भर गया। दुकानें बंद हो गईं। लोग कमर तक डूबकर सड़क पार कर रहे हैं। भोपाल,हरदा, सीहोर में झमाझम बारिश हुई।वहीं उज्जैन में एक युवक बह गया।

भारी बारिश के चलते बाइक पर पेड़ गिरा, दो घायल– मुंबई के ठाणे शहर के कलवा इलाके में शनिवार सुबह भारी बारिश के दौरान दो–पहिया वाहनों पर पेड़ गिरने से दो लोग घायल हो गए।ठाणे नगर निगम के क्षेत्रीय आपदा प्रबंधन सेल के प्रमुख यासीन तडवी ने बताया कि यह घटना खारेगांव नाका पर हुई।उन्होंने कहा, आपदा प्रबंधन सेल को सुबह 9.38 बजे इस घटना की सूचना मिली।सड़क पर एक बड़ा पेड़ गिर गया, जिसकी चपेट में दो लोग आ गए जो उस समय अपने दो–पहिया वाहनों से वहां से गुजर रहे थे।ट्री अथॉरिटी विभाग और फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने गिरे हुए पेड़ को काटकर सड़क से हटाया ताकि ट्रैफिक के लिए रास्ता साफ हो सके।

बंगाल कई जिलों के लिए रेड वॉर्निंग– बंगाल की खाड़ी में लो प्रेशर एरिया बना है।भारत के मौसम विज्ञान विभाग ने पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना और पूर्व मेदिनीपुर जिलों के लिए रेड वॉर्निंग जारी की।यह कलर–कोडेड वॉर्निंग का सबसे ऊंचा स्तर है।विभाग ने झाड़ग्राम, पश्चिम मेदिनीपुर और हावड़ा के लिए ऑरेंज अलर्ट भी जारी किया और लोगों से खराब मौसम के लिए तैयार रहने को कहा।साथ ही, चेतावनी दी कि रविवार को हालात और बिगड़ सकते हैं।राज्य सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि जिला प्रशासन को बारिश से जुड़ी किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया गया है। कंट्रोल रूम चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं।

खनिज संपदा और निवेश से प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत मिशन को नई गति दे रहा मध्यप्रदेश : मुख्यमंत्री

बैतूल से आलीराजपुर तक ग्रेफाइट के भण्डार, प्रदेश बन रहा देश का क्रिटिकल मिनरल हब

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खनिज संपदा की प्रचुरता और निवेश अनुकूल नीतियों से मध्यप्रदेश देश की औद्योगिक प्रगति में अहम भूमिका निभा रहा है। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत मिशन को भी बल मिलेगा। बैतूल से आलीराजपुर तक फैली खनिज बेल्ट में उच्च गुणवत्ता वाले ग्रेफाइट के विशाल भंडार मिलने से प्रदेश देश के उभरते 'क्रिटिकल मिनरल हब' के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है। इस बेल्ट में हाई फिक्स्ड कार्बन और उत्कृष्ट फ्लेकी गुणवत्ता वाला ग्रेफाइट पाया गया है। इसे इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), ऊर्जा भंडारण, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा उद्योगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह खोज मध्यप्रदेश को भविष्य की हरित अर्थव्यवस्था का प्रमुख केंद्र बनाने के साथ देश को हरित ऊर्जा एवं ऊर्जा भंडारण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

उच्च गुणवत्ता वाला ग्रेफाइट, औद्योगिक विकास का नया आधार– प्रदेश ग्रेफाइट संसाधनों में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है। प्रदेश के बैतूल, आलीराजपुर और सीधी जिलों में उच्च गुणवत्ता वाले ग्रेफाइट के विशाल भंडार चिन्हित किए गए हैं। इन क्षेत्रों से प्राप्त ग्रेफाइट में उच्च स्थिर कार्बन की मात्रा होने के कारण यह इलेक्ट्रोड निर्माण, बैटरी उद्योग तथा अन्य उच्च तकनीकी औद्योगिक उपयोगों के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है।

दो हजार तक पहुंच सकती थी घरेलू सिलेंडर की कीमत

मोदी ने कहा-सबसे बड़े ऊर्जा संकट से उबर गया भारत

पीएम मोदी ने राजस्थान में रिफाइनरी का उद्घाटन

बालोतरा (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- युद्ध के कारण जो हालात पैदा हुए, उसके कारण घरेलू गैस के दाम 2 हजार रुपए तक जा सकते थे। सरकार ने इसको लेकर बेहतर मैनजमेंट किया। इसी का परिणाम है, सिलेंडर 950 रुपए के करीब मिल रहा है। पीएम शनिवार को राजस्थान के दौरे पर रहे। दोपहर करीब 12 बजे वह बालोतरा के पचपदरा पहुंचे। यहां देश की सबसे आधुनिक रिफाइनरी के कंट्रोल रूम को देखा और एक्सपर्ट्स से बात की। इसके बाद रिफाइनरी का उद्घाटन किया। जयपुर मेट्रो के फेज-2 की आधारशिला (वर्चुअल) भी रखी। इससे पहले शनिवार सुबह करीब 10.40 बजे जोधपुर पहुंचे। यहां उन्होंने एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया। नए टर्मिनल को देखा। उड़ान-2.0 की शुरुआत भी यहीं से की।

● **'युद्ध के समय भारत की डिप्लोमेसी का जलवा दिखा'–** अप्रैल से जून के बीच पेट्रोल–डीजल से ही कंपनियों को 75 हजार करोड़ रुपए का घाटा हुआ।ये इतना बड़ा था कि एक नई रिफाइनरी बन जाए।ये घाटा सरकारी खजाने से भरा गया।युद्ध के समय भारत की दूसरे देशों से दोस्ती बहुत काम आई।पहले जहां 25–26 देशों से ईंधन खरीदते थे, वह 40 देशों तक पहुंच गया।युद्ध के समय भारत की डिप्लोमेसी का जलवा दिखा।कांग्रेस की सरकारों ने राजस्थान के जल संकट को दूर करने के लिए ठोस काम नहीं किया।

● बिहार के नए सीएम को सत्ता से सड़क तक मिल रहा बंपर सपोर्ट

सम्राट मॉडल को मिली नीतिश के शैडो इमेज की नई संजीवनी

पटना (एजेंसी)। बिहार को सुशासन और विकास के रथ पर सवार करने वाले राज्य के मुख्यमंत्री रहे नीतिश कुमार सत्ता की कुर्सी से भले अलग हुए हों, मगर वे विकास के अपने चिंतन से मुक्त नहीं हुए हैं। नतीजतन, सम्राट मॉडल पर चल रही सरकार पर नीतिश कुमार की निगहबानी एक शैडो इमेज के साथ लगातार दिख रही है। एक राजनीतिक फैसले के तहत राज्य के मुख्यमंत्री रहे नीतिश कुमार भले राज्यसभा चले गए लेकिन, चलते सत्र से एक खास दूरी बना कर ही रखी। उनकी चितल स्थली बिहार ही बनी रही। केंद्रीय मंत्रिपरिषद विस्तार को लेकर उपप्रधानमंत्री या केंद्रीय मंत्री को लेकर लाख चर्चा होते रही। मगर, इस चर्चा से दूर अपने नए आवास पर आम कार्यकर्ता से मिलते रहे और उनकी फरियाद भी सुनते रहे। ये फरियाद नक्कारखाने की आवाज नहीं बनते रही बल्कि उसे संबंधित अधिकारी तक पहुंचाने का सिस्टम भी बनाया गया।

● **भरत तिवारी एनकाउंटर मामला–** भरत तिवारी कथित एनकाउंटर को लेकर जिस तरह से बीजेपी के भीतर सवर्ण नेताओं ने पुलिस तंत्र पर हमला बोला।एनकाउंटर पर सवाल उठे।गोलबंदी शुरू हो गई।उस गोलबंदी के साथ सम्राट मॉडल पर निशाना साधे जाने लगे। ऐसे में केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी या फिर मंत्री अशोक चौधरी ने मोर्चा संभाला।साथ ही एक खास वर्ग जब सम्राट मॉडल के समर्थन में उतरा, ये नीतिश कुमार के शेडो इमेज का प्रभाव रहा।ऐसा इसलिए कि मुख्यमंत्री के रूप में सम्राट का चयन नीतिश ने किया है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 05 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन ने रोड शो में लहराई तलवार

- मुस्लिम महिलाएं भी शामिल हुईं,बुलडोजर से पहनाई 25 फीट की माला

लखनऊ (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने शनिवार को लखनऊ में रोड शो किया। एयरपोर्ट से भाजपा प्रदेश मुख्यालय तक 18 किलोमीटर लंबा यह रोड शो सुबह 11.20 बजे

शुरू हुआ और दोपहर 1.55 बजे समाप्त हुआ। एयरपोर्ट से निकलने के बाद वह प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी के साथ विशेष रथ पर सवार होकर रोड शो के लिए रवाना हुए। पूरे मार्ग में जगह-जगह कार्यकर्ताओं और विभिन्न सामाजिक संगठनों ने उनका स्वागत किया। कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं से उनका स्वागत किया और जमकर नारेबाजी की। रोड शो के दौरान नितिन नवीन ने समर्थकों का अभिवादन भी किया।

बाराबंकी में हाईवे पर बनेंगे दो ओवरब्रिज और 2 अंडरपास

लखनऊ-अयोध्या राजमार्ग पर 170 करोड़ खर्च करेगी सरकार

लखनऊ (एजेंसी)। अयोध्या राष्ट्रीय राजमार्ग पर सड़क हादसों में अंकुश व स्थानीय लोगों के सुरक्षित आवागमन के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) जल्द काम शुरू करने जा रहा है। जिले की सीमा में हाईवे पर दो ओवर ब्रिज और दो अंडर पास बनाने की तैयारी अंतिम

चरण में है। सभी औपचारिकताएं समय से पूरी हो गईं तो अक्टूबर माह से निर्माण कार्य शुरू होने की संभावना है। जिसका बजट 170 करोड़ बताया जा रहा है। करीब एक वर्ष पहले बनी इस परियोजना में चार ऐसे स्थानों को चिह्नित किया गया है, जहां लगातार बढ़ते यातायात और सड़क पार करने के दौरान होने वाले हादसों को देखते हुए स्थायी समाधान की जरूरत महसूस की गई थी। योजना के तहत सफेदाबाद और सफदरगंज चौराहा पर ओवर ब्रिज बनाए जाएंगे।

खामेनेई की विदाई में काले कपड़े पहने पहुंचे लाखों लोग

खून बहेगा, बदला-बदला के नारे लगाए,ट्रम्प बोले-ईरान को एक हफ्ते की छुट्टी दी

तेहरान (एजेंसी)। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई को आखिरी विदाई देने के लिए शनिवार को लाखों लोग तेहरान के ग्रैंड मोसल्ला में जुटे हैं। शिया परंपरा के मुताबिक काले कपड़े पहने लोग छाती पीटकर मातम मनाते दिखे।

इस दौरान लोगों ने 'खून बहेगा', 'अमेरिका मुर्दाबाद' और 'बदला, बदला' जैसे नारे भी लगाए। तेहरान में 3 जुलाई से खामेनेई के अंतिम संस्कार से जुड़ी रस्में शुरू हो गई हैं जो 9 जुलाई तक चलेंगी। कल शुक्रवार को कार्यक्रम में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। हालांकि रूस, चीन, भारत और तुर्किये जैसे देशों के टॉप लीडर्स ने इससे दूरी बरती। ईरान की तरफ से न्योता भेजे जाने के बावजूद इन्होंने अपने निचले स्तर के प्रतिनिधियों को भेजा।

गाडरवारा और लखनादौन में पूर्व सीएमओ धीमोले के घर ईओडब्ल्यू की रेड

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रही मुहिम के तहत जबलपुर आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। ईओडब्ल्यू की टीमों ने पूर्व प्रभारी मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) योगेंद्र कुमार धीमोले के ठिकानों पर ताबड़तोड़ छापेमारी की, जिसमें शुरुआती तौर पर ही 2.36 करोड़ रुपये से अधिक की अनुपातहीन संपत्ति का खुलासा हुआ है।

आय से अधिक संपत्ति की पुख्ता शिकायत मिलने के बाद हरकत में आई ईओडब्ल्यू की अलग-अलग टीमों ने शुक्रवार को धीमोले के गाडरवारा और लखनादौन स्थित रिहायशी परिसरों पर एक साथ सर्च ऑपरेशन शुरू किया।

वरिष्ठ पत्रकार योगेश कुमार गोयल को मिला 'देश रत्न अवार्ड'

नई दिल्ली। 36 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं विश्लेषक योगेश कुमार गोयल को नई दिल्ली में एक भव्य समारोह में 'देश रत्न अवार्ड' से सम्मानित किया गया। नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें यह सम्मान उनकी चर्चित पुस्तक 'सागर से अंतरिक्ष तक- भारत की रक्षा क्रांति' के लिए नेशनल अकाली दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष परमजीत सिंह पम्मा ने देशभर से आए शिक्षाविदों, चिकित्सकों, पत्रकारों, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों की अनेक प्रतिष्ठित हस्तियों की गरिमामयी उपस्थिति में प्रदान किया। इसी अवसर पर उनकी इसी पुस्तक का विधिवत विमोचन भी किया गया। साढ़े तीन दशक से भी अधिक समय से पत्रकारिता एवं शोधपरक लेखन के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय योगेश कुमार गोयल ने राष्ट्रीय सुरक्षा, पर्यावरण, वन्यजीव संरक्षण, सामाजिक

सरोकारों और समसामयिक राष्ट्रीय विषयों पर अपने सशक्त एवं तथ्यपरक लेखन से विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने वर्ष 1993 में मात्र 19 वर्ष की आयु में नशामुक्ति विषय पर अपनी पहली चर्चित एवं पुरस्कृत पुस्तक 'मौत को खुला निमंत्रण' लिखकर साहित्य और जनजागरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय शुरुआत की थी। अब तक 14 हजार से अधिक लेखों तथा कई चर्चित पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने जनजागरण और राष्ट्रीय विमर्श को नई दिशा दी है। उनकी प्रमुख कृतियों 'सागर से अंतरिक्ष तकभारत की रक्षा क्रांति', 'प्रदूषण मुक्त सांसें', 'जीव-जंतुओं की अनोखी दुनिया' तथा 'दो टूक' को हिन्दी अकादमी, दिल्ली एवं हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा आर्थिक अनुदान प्राप्त हो चुका है, जो उनके लेखन की गुणवत्ता और सामाजिक उपयोगिता का प्रमाण है। योगेश कुमार गोयल को 17 वर्षों तक देश की तीन प्रमुख फीचर एजेंसियों के संपादन का अनुभव भी प्राप्त है। उनकी नवीनतम पुस्तक 'सागर से अंतरिक्ष तक- भारत की रक्षा क्रांति' भारत की बदलती रक्षा रणनीति, स्वदेशी सैन्य तकनीक, आत्मनिर्भरता, अंतरिक्ष एवं समुद्री सुरक्षा, आधुनिक युद्धक क्षमताओं और भविष्य की रक्षा चुनौतियों का व्यापक एवं शोधपरक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

5 महाद्वीप चाहते हैं संघ उनके कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग दे

- नागपुर में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने दिया बड़ा बयान

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि संघ के चरित्र निर्माण के मॉडल ने दुनिया भर में दिलचस्पी पैदा की है। भारत और पांचों महाद्वीपों से लोग यह पूछने आ रहे हैं कि क्या आरएसएस कार्यकर्ता उन्हें ट्रेनिंग दे सकते हैं। वे अपने देशों में युवाओं को इसी तरह की मूल्यों पर आधारित ट्रेनिंग देना चाहते हैं। आरएसएस प्रचारकों के जीवन और योगदान को दिखाने वाली सीरीज के 100वें वीडियो के लॉन्च पर बोलते हुए मोहन भागवत ने यह बात कही। आरएसएस चीफ ने कहा कि संघ का मिशन सिर्फ अच्छे चरित्र वाले लोग बनाने से कहीं आगे तक जाता है। उन्होंने कहा कि यह सफर अभी जारी है। अभी बहुत दूर जाना है। संघ का काम सिर्फ चरित्र निर्माण का उदाहरण पेश करने तक सीमित नहीं है।

- **किताबें पढ़कर या लेक्चर सुनाकर नहीं समझ सकते सिद्धांत-** मोहन भागवत ने कहा कि संघ के सिद्धांतों को सिर्फ किताबें पढ़कर या लेक्चर सुनकर नहीं समझा जा सकता, बल्कि उन्हें जीवन में उतारकर ही समझा जा सकता है। उनके अनुसार, स्वयंसेवक का मुख्य गुण सिर्फ सक्रियता नहीं, बल्कि एक संगठित, अनुशासित और मूल्यों पर आधारित जीवन जीना है। उन्होंने इस धारणा को भी गलत बताया कि संघ अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले संगठनों को सीधे तौर पर नियंत्रित करता है। मोहन भागवत ने कहा कि संघ में ट्रेनिंग पाने वाले स्वयंसेवक समाज की जरूरतों के हिसाब से अलग-अलग क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से काम करते हैं, जबकि संघ खुद चरित्र व अनुशासन सिखाता है।

बंगाल में ममता की टीएमसी को एक और झटका

कोलकाता (एजेंसी)। विधायक और सांसदों की बगावत से जूझ रही ममता बनर्जी को एक और तगड़ा झटका लगा है। पूर्व सीएम की करीबी चंद्रिमा भट्टाचार्य ने शनिवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। विधायक दल के दो टुकड़े होने के बाद 3 जून को ममता बनर्जी ने चंद्रिमा भट्टाचार्य को पश्चिम बंगाल टीएमसी का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया था। वह ममता बनर्जी की करीबी नेताओं में शुमार थीं। उनका इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब बागी गुट ने पार्टी ऑफिस पर कब्जा कर लिया है। चंद्रिमा ममता बनर्जी की सरकार में स्वास्थ्य और वित्त जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाल चुकी हैं। टीएमसी की प्रदेश अध्यक्ष चंद्रिमा भट्टाचार्य ने अपने इस्तीफे के पत्र में लिखा है कि वह राज्य अध्यक्ष पद से अपना इस्तीफा दे रही हैं।

हर दिन 8 लाख रुपए के दान की हो रही थी चोरी!

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर दान चोरी मामले में आए दिन नए खुलासे हो रहे हैं। इस बीच चढ़ावा चोरी को लेकर भी कई चौंकाने वाली बातें सामने आ रही है। सूत्रों की मानें तो पुलिस पूछताछ में अविनाश ने कई बातें पुलिस को बताई हैं। जो चढ़ावा चोरी किया जाता था, उसका बंटवारा 14 कोसी परिक्रमा मार्ग पर भीखापुर के निकट एक बाग में बंटवारा होता था। पुलिस ने उससे उस जगह को चिह्नित कराया। पुलिस टीम आरोपी को विवेचक आशुतोष त्रिपाठी के नेतृत्व में कौशलपुरी स्थित श्याम साधनालय योग केंद्र के किराये के कमरे में लेकर पहुंची थी। सूत्रों की मानें तो पुलिस को अविनाश ने बताया कि जो भी रकम सभी लोग मिलकर पार करते थे, वह बराबर हिस्सों में बांटी जाती थी। कभी-कभार कोई अधिक ले जाता था। हालांकि, टिन्नू इसमें दबाव भी बनाता था। अविनाश ने इसी रकम से कार खरीदी, गांव वाला घर बनाया और अपने साथ भाई को भी खूब पैसे दिए। रोजाना 6 से 8 लाख रुपये की दानराशि में अनियमितता: पुलिस जांच में ये बात भी सामने आई है कि अविनाश शुक्ला की भर्ती की सिफारिश अनिल मिश्रा ने की थी। लेकिन वह किसी के जरिये अनिल मिश्रा तक पहुंचा था, अब पुलिस इसका पता लगा रही है। सूत्रों की मानें तो चढ़ावा चोरी की जांच के बीच एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया है। सूत्रों के अनुसार, चोरी का मामला उजागर होने से पहले प्रतिदिन राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के बैंक खातों में औसतन 16 से 18 लाख रुपये दान के रूप में जमा हो रहे थे।

- बाग में होता था मंदिर में चढ़ावे की रकम का बंटवारा
- राम मंदिर दान मामले में हर रोज हो रहे हैं नए खुलासे

देवास की गफूर बस्ती में मिला जैश-ए-मोहम्मद का संदिग्ध आतंकी

देवास (नप्र)। मध्य प्रदेश के मालवा अंचल में आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के स्लीपर सेल और संदिग्ध नेटवर्क को लेकर एक बड़ा खुलासा हुआ है। गुजरात आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने देवास में स्थानीय पुलिस की मदद से छापेमारी कर प्रतिबंधित संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक संदिग्ध मॉड्यूल के सक्रिय सदस्य को दबोच लिया है। गिरफ्तार किए गए 18 वर्षीय आरोपी की पहचान बिलाल दुरानी, पिता मोहम्मद अम्मार घाघा उर्फ अबू दुजाना के रूप में हुई है, जो सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी हैंडलर्स के सीधे संपर्क में था और भारत में आतंकी नेटवर्क खड़ा करने की साजिश में लिप्त था।

गफूर बस्ती में आधी रात को एटीएस का छापा- गुजरात एटीएस की टीम गुरुवार रात अचानक देवास के नाहर दरवाजा थाना क्षेत्र के अंतर्गत वारसी नगर स्थित गफूर बस्ती पहुंची। स्थानीय पुलिस को साथ लेकर टीम ने बिलाल के घर की घेराबंदी की और परिजनों से कड़ी पूछताछ के बाद उसे अपनी अभिरक्षा में ले लिया।

देवास के पुलिस अधीक्षक ने इस हाई-प्रोफाइल गिरफ्तारी की पुष्टि करते हुए बताया कि गुजरात एटीएस एक संदिग्ध की तलाश में आई थी, जिसे नियमानुसार कानूनी कागजी कार्रवाई पूरी कर एटीएस के हवाले कर दिया गया है।

टाईल्स लगाने की आड़ में चल रहा था देश विरोधी खेल- जांच में सामने आया है कि आरोपी बिलाल दुरानी देवास में मजदूरी और टाइल्स लगाने का काम करता था, ताकि किसी को उस पर शक न हो। हालांकि, डिजिटल स्पेस में वह बेहद सक्रिय था और लगातार संवेदनशील व भड़काऊ कंटेंट सोशल मीडिया पर शेयर कर युवाओं को बरगला रहा था। बिलाल का परिवार मूल रूप से गुजरात का रहने वाला है, जो वर्ष 1997-98 में देवास आकर बस गया था। एटीएस के सूत्रों के मुताबिक, बिलाल के सगे बड़े भाई जकरिया दुरानी (21 वर्ष) को भी गुजरात से ही गिरफ्तार किया गया है। दोनों भाई इस राष्ट्रविरोधी नेटवर्क का हिस्सा थे। इस बड़े मॉड्यूल का भंडाफोड़ करने के लिए मध्य प्रदेश और गुजरात में चलाई गई संयुक्त मुहिम में अब तक कुल आठ संदिग्धों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

ममता की टीएमसी को एक और झटका

पुरानी सहयोगी चंद्रिमा भट्टाचार्य ने दिया इस्तीफा

कोलकाता (एजेंसी)। विधायक और सांसदों की बगावत से जूझ रही ममता बनर्जी को एक और तगड़ा झटका लगा है। पूर्व सीएम की करीबी चंद्रिमा भट्टाचार्य ने शनिवार को पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। विधायक दल के दो टुकड़े होने के बाद 3 जून को ममता बनर्जी ने चंद्रिमा भट्टाचार्य को पश्चिम बंगाल टीएमसी का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया था। वह ममता बनर्जी की करीबी नेताओं में शुमार थीं। उनका इस्तीफा ऐसे समय आया है, जब बागी गुट ने पार्टी ऑफिस पर कब्जा कर लिया है।

चंद्रिमा ममता बनर्जी की सरकार में स्वास्थ्य और वित्त जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाल चुकी हैं। टीएमसी की प्रदेश अध्यक्ष चंद्रिमा भट्टाचार्य ने अपने इस्तीफे के पत्र में लिखा है कि वह ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के राज्य अध्यक्ष पद से अपना इस्तीफा दे रही हैं। इसके साथ ही उन्होंने पार्टी के अन्य पदों से भी त्यागपत्र देने का ऐलान कर दिया। अपने इस्तीफे में उन्होंने ममता बनर्जी को टीएमसी अध्यक्ष के बजाय पूर्व मुख्यमंत्री के तौर पर संबोधित किया। चंद्रिमा भट्टाचार्य ने अपने त्यागपत्र में खास तौर पर यह बताया है कि वह तृणमूल कांग्रेस और उससे जुड़ी सभी संस्थाओं के विभिन्न बैंकों में मौजूद खातों के लिए अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता (ऑथराइज्ड सिग्नेटरी) के तौर पर अपना नाम वापस ले रही हैं।

नरेंद्र सिंह तोमर की अध्यक्षता में गठित समिति ने 11 बिंदुओं पर की अनुशंसाएं

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर की अध्यक्षता में समिति प्रणाली की समीक्षा के लिए गठित पीठासीन अधिकारियों की समिति की अंतिम बैठक पश्चिम बंगाल विधानसभा कोलकाता में संपन्न हुई। तीन समीक्षा बैठकों में चर्चाओं के बाद समिति ने 11 बिंदुओं पर अनुशंसाएं की हैं। इन सिफारिशों के साथ समिति का प्रतिवेदन सात राज्यों के अध्यक्षों ने लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला को सौंपा गया। प्रतिपादन सौंपते समय सात राज्यों के अध्यक्ष सर्वश्री नरेंद्र सिंह तोमर, अध्यक्ष मध्य प्रदेश विधानसभा, सतीश महाना अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश विधानसभा, वासुदेव देवनानी अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा, कुलदीप सिंह पठानिया अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधानसभा, रथीन्द्र नाथ बोस अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल विधानसभा, मिंग्मा नोर्बु शेरपा अध्यक्ष, सिक्किम विधानसभा तथा श्रीमती सुरामा पाढी अध्यक्ष, ओडिशा विधानसभा उपस्थित थे।

गौरतलब है कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने विधायी कार्यवाही में वित्तीय सहित तदर्थ समितियों की भूमिका के महत्व को रेखांकित किया है। इस भूमिका को अधिक स्पष्ट और समर्थ बनाने के लिए गठित समिति की अध्यक्षता मध्यप्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर को सौंपी गई थीं। समिति में 6 राज्यों राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा, सिक्किम एवं पश्चिम बंगाल के राज्य विधान मण्डल शामिल हैं। समिति की पहली बैठक मध्य प्रदेश विधानसभा भोपाल में 14 जुलाई, 2025 को एवं दूसरी बैठक राजस्थान विधानसभा, जयपुर में 5 मई, 2026 को हुई थी। कोलकाता में तीसरी और अंतिम बैठक में विधानसभा समितियों के संबंध में विमर्श हुआ।

पीठासीन अधिकारियों की समिति ने समितियों की बैठकों की संख्या, सभा समिति के सदस्यों के कार्यकाल, सभा समितियों के कोरम, सभा समितियों की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन, विधेयकों को समितियों को संदर्भित किए जाने, सभा समितियों के प्रतिवेदनो पर चर्चा, सभा समितियों में विशेषज्ञों को आमंत्रित करने तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम, मौखिक साक्ष्य के दौरान विभागीय अधिकारियों की उपस्थित सुनिश्चित करने बजट परीक्षण हेतु स्थायी समितियों के गठन, सलाहकार समितियों के गठन, समितियों के अध्ययन दौरे के पश्चात की जाने वाली करवाई आदि पर विचार कर 11 बिंदुओं पर अपनी सिफारिशें दी हैं।

कटनी बनेगा प्रदेश का प्रमुख लॉजिस्टिक हब : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

प्रदेश में शुरू होगी 10 हजार स्मार्ट क्लासेस, 4 लाख बच्चों को मिलेगा सीधा लाभ- प्रभारी मंत्री श्री सिंह

'गोल्ड सिटी' के तौर पर भी जाना जाएगा कटनी : सांसद डॉ. वी डी शर्मा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल के मुख्यातिथ्य और प्रदेश के स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री और कटनी जिले के प्रभारी मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता तथा खजुराहो सांसद श्री वी.डी. शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में शनिवार को कटनी के सर्वांगीण विकास पर सार्थक संवाद का आयोजन किया गया। एक निजी समाचार पत्र समूह द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में कटनी के औद्योगिक, वाणिज्यिक एवं समग्र विकास की दिशा में समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि कटनी में औद्योगिक विकास, पर्यटन और हरित क्रांति की असीम संभावनाएं हैं। यदि इन तीनों क्षेत्रों का समन्वित विकास किया जाए तो जिले से गरीबी और बेरोजगारी पूरी तरह समाप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में विकास की नई बयार बह रही है। कटनी को उन्होंने 'मिनरल सिटी' और 'मार्वल सिटी' बताते हुए राज्य का एक महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक हब बताया।उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आर्थिक रूप से विश्व में 11वें स्थान से अब चौथे स्थान पर पहुंच गया है।

10 हजार स्मार्ट क्लास होंगे शुरू-प्रभारी मंत्री श्री सिंह- प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री तथा कटनी जिले के प्रभारी मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कार्यक्रम में कहा कि ऐसे मंच लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं, जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों के साथ दोतरफा संवाद संभव होता है।

रत्नगर्भा है कटनी की धरती : सांसद श्री शर्मा- सांसद श्री विष्णु दत्त शर्मा ने इस संवाद कार्यक्रम को कटनी के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि कटनी को अब केवल 'लाइम सिटी' और 'मार्बल सिटी' के रूप में ही नहीं, बल्कि भविष्य में 'गोल्ड सिटी' के तौर पर जाना जाएगा। कटनी की धरा 'रत्नगर्भा धरती' है। सांसद श्री शर्मा नें कहा की रेल और रोड नेटवर्क को और मजबूत करने के साथ-साथ कटनी में एयर स्ट्रिप विकसित करने के प्रयास तेज किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त कटनी में 'मल्टी-लॉजिस्टिक्स हब' के निर्माण की दिशा में काम चल रहा है। इसके हेतु जमीन आवंटन की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। सांसद ने कहा कि इंदौर की तर्ज पर कटनी को सुंदर व स्वच्छ बनाने के लिए सुनियोजित कार्ययोजना बनाकर अमल किया जाय।

सोनोग्राफी केंद्र सील किया गया

इंदौर। पीसीपीएनडीटी अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए डॉ दीक्षा वुमेन्स क्लिनिक एवं सोनोग्राफी केंद्र, एलजी-2ए, लक्ष्य

चौराहा, रानी बाग, खंडवा रोड, इंदौर का पंजीयन निलंबित कर केन्द्र के संचालन पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी गई। क्लिनिक का औचक निरीक्षण पीसीपीएनडीटी की नोडल अधिकारी डॉ निर्मला अखंड एवं पर्यवेक्षण दल की सदस्य श्रीमती दीपमाला बामने द्वारा किया गया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि केंद्र पर डॉ पूनम रायकवार ओपीडी संचालित कर रही थीं, जबकि केन्द्र से संबंधित समस्त पंजीयन डॉ. दीक्षा छाछरिया के नाम पर दर्ज हैं। इसे प्रथम दृष्टया पीसीपीएनडीटी अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन माना गया। निरीक्षण के दौरान मिली अनियमितताओं की सूचना मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ माधव प्रसाद हासानी को दी गई। इसके उपरांत कलेक्टर श्री वर्मा के निर्देशानुसार 29 जून को निरीक्षण दल द्वारा केन्द्र के सभी आवश्यक अभिलेख एवं दस्तावेज सीज करने की कार्रवाई की गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा निरीक्षण प्रतिवेदन कलेक्टर को प्रस्तुत किए जाने के बाद उपलब्ध तथ्यों के आधार पर 3 जुलाई 2026 को क्लिनिक का पीसीपीएनडीटी पंजीयन निलंबित कर दिया गया तथा सोनोग्राफी केंद्र के संचालन पर रोक लगा दी गई।

नीम का पेड़ ढहा, कार क्षतिग्रस्त

इंदौर। शहर में शुक्रवार को हुई बारिश के दौरान जंजीर वाले

चौराहे के समीप वर्षों पुराना नीम का पेड़ अचानक भरभराकर गिर पड़ा। पेड़ की चपेट में आने से पास खड़ी एक कार क्षतिग्रस्त हो गई। घटना के समय वहां अफरा-तफरी मच गई, हालांकि किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। सूचना मिलते ही नगर निगम की टीम मौके पर पहुंची और पेड़ हटाने का काम शुरू किया। पेड़ गिरने से कुछ देर तक यातायात भी प्रभावित रहा।

धमकी, पीछा करने और शादी का दबाव बनाने के तीन मामले दर्ज

इंदौर। महिलाओं और छात्राओं के साथ धमकी, पीछा करने और मानसिक प्रताड़ना के तीन अलग-अलग मामले सामने आए हैं। खजराना, परदेशीपुरा और जूनी इंदौर थाना पुलिस ने पीड़िताओं की शिकायत पर आरोपियों पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। खजराना थाना क्षेत्र की 35 वर्षीय महिला ने बताया कि वह सिलाई करती है, जबकि पति बबलू शेख की देवास में नौकरी है। महिला के अनुसार पति के व्यवहार से परेशान होकर वह दो महीने से अलग रह रही थी। इसके बाद पति फोन कर उसे जान से मारने, हाथ-पैर कटवाने और कहीं फिंकवा देने जैसी धमकियां देने लगा। पति के कहने पर उसका दोस्त जाकिर पटेल भी फोन कर उसे डराता धमकाता था। दूसरा मामला विजयनगर का है, जहां पुलिस ने बीकॉम अंतिम वर्ष की छात्रा की शिकायत पर अभिषेक पर छेड़छाड़, पीछा करने और धमकी देने का मामला दर्ज किया। छात्रा ने बताया कि कुछ समय पहले उसकी पहचान इंस्टाग्राम के जरिए अभिषेक से हुई थी। बातचीत के दौरान आरोपी ने उसे मंगल सिटी मॉल बुलाकर शादी का प्रस्ताव दिया, लेकिन पढ़ाई पूरी होने का कारण बताते हुए छात्रा ने इंकार कर दिया। इसके बाद आरोपी लगातार परेशान करने लगा। उसने छात्रा के परिजनों से भी शादी की बात की और धमकी दी कि यदि उसकी शादी किसी और से हुई तो वह उसे बदनाम कर देगा और जान से मार देगा। तीसरा मामला जूनी इंदौर पुलिस को 12वीं कक्षा की छात्रा ने बताया कि आरोपी जयप्रकाश दो महीने से स्कूल आने-जाने के दौरान उसका पीछा कर रहा था। काफी समय तक यह सिलसिला जारी रहने के बाद उसने इसकी जानकारी अपने परिजनों को दी।

महू में वन भूमि पर कब्ज़ा रोका गया

महू। वन विभाग ने जंगल की शासकीय जमीन पर अवैध कब्जे की कोशिश को समय रहते विफल करते हुए कार्रवाई की है। महू क्षेत्र के कुशलगढ़ बीट के कक्ष क्रमांक-102 में वन भूमि पर अतिक्रमण की सूचना मिलते ही विभाग की टीम मौके पर पहुंची और कब्जा करने पहुंचे लोगों को खदेड़ दिया। कार्रवाई के दौरान अतिक्रमणकारियों में अफरा-तफरी मच गई और वे मौके से भाग निकले। रेंजर नयन कुमार मालवीय के नेतृत्व में वन अमले ने तत्काल मौके पर पहुंचकर वन भूमि का निरीक्षण किया और अवैध कब्जे की कोशिश को पूरी तरह नाकाम कर दिया। विभाग की सतर्कता के चलते जंगल की जमीन को सुरक्षित बचा लिया गया। वन अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि वन भूमि पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण या अवैध कब्जा किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे मामलों में तत्काल कार्रवाई कर दोषियों के खिलाफ वन अधिनियम के तहत सख्त वैधानिक कदम उठाए जाएंगे।

वेलोसिटी नाले के गहरीकरण के निर्देश

इंदौर। लगातार बारिश के बीच शहर में जलभराव की समस्या को लेकर नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने शुक्रवार को बाम्बे हॉस्पिटल,लसूड़िया मोरी,एसआर कम्पाउंड,पंचवटी, रेडिसन और रोबोट चौराहा सहित कई संवेदनशील क्षेत्रों का निरीक्षण किया। एसआर कम्पाउंड में एक निर्माण कार्य के दौरान स्टॉर्म वाटर लाइन क्षतिग्रस्त मिलने पर आयुक्त ने तत्काल काम रुकवाकर संबंधित के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए। साथ ही सीवरेज कार्य के बाद सड़क का रेस्टोरेशन शीघ्र पूरा करने को कहा। रेडिसन से रोबोट चौराहे तक निरीक्षण के दौरान जल निकासी व्यवस्था का जायजा लेते हुए वेलोसिटी के सामने स्थित नाले के गहरीकरण और सफाई के निर्देश दिए गए। निगम अमले ने आयुक्त के निर्देश मिलते ही नाले की सफाई और गहरीकरण का कार्य शुरू कर दिया। निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त अभय राजनगवंकर सहित निगम के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

पति, सास पर दहेज हत्या का केस

इंदौर। दहेज प्रताड़ना से तंग आकर सत्यसाई बाग कालोनी की महिला सुहानी ने 21 जून आत्महत्या कर ली थी। मामले में जांच के बाद बाणगंगा पुलिस ने महिला के पति और सास पर दहेज हत्या का केस दर्ज किया था। पुलिस जांच और परिजनों के बयानों में सामने आया कि पति विशाल विश्वकर्मा और सास भगवती मृतका को मायके से 10 लाख रुपए लाने के लिए प्रताड़ित कर रहे थे, जिससे तंग आकर उसने खुदकुशी की थी।

ट्राले ने युवक को कुचला

इंदौर। स्कीम नंबर 136 चौराहे से खालसा चौराहे के बीच अनियंत्रित भारी ट्राले ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी। ट्राले की चपेट में आने से युवक की मौके पर ही मौत हो गई। लसूड़िया पुलिस के अनुसार, इस हादसे में मृतक की शिनाख्त निशांत जोशी निवासी श्रीनाथ मल्टी, लोहामंडी के रूप में हुई है। निशांत किसी निजी काम से लसूडिया की तरफ गया हुआ था। जब वह स्कीम नंबर 136 चौराहे से गुजर रहा था, तभी सामने से आ रहे हरियाणा पासिंग ट्राले के चालक ने अपनी चपेट में ले लिया था।

बिना इमारत के कागजों पर 100 बेड का अस्पताल, 87 पद मंजूर, तबादले भी जारी

6 साल बाद भी जमीन नहीं, मरीज नहीं, फिर भी स्टाफ की पोस्टिंग, ट्रांसफर

इंदौर। शहर में स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़ा करने वाला एक मामला सामने आया। खजराना क्षेत्र के लिए स्वीकृत 100 बेड के सिविल अस्पताल का 6 साल बाद भी न तो भवन बन सका है और न अस्पताल भौतिक स्वरूप में है। इसके बावजूद अस्पताल के नाम पर डॉक्टर, मेडिकल ऑफिसर, स्टाफ नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टेक्नीशियन और अन्य कर्मचारियों सहित 87 पद स्वीकृत किए गए, नियुक्तियां हुईं और समय-समय पर तबादले भी किए जाते रहे। हाल ही में 15 जून, 2026 को जारी एक आदेश में एक लैब टेक्नीशियन का तबादला आधिकारिक रूप से खजराना सिविल अस्पताल में किया गया। जबकि, यह अस्पताल अब तक एक भी मरीज को भर्ती नहीं कर सका है, क्योंकि इसके लिए न जमीन उपलब्ध है और न ही भवन का निर्माण शुरू हुआ है। 23 जून, 2020 को प्रदेश सरकार ने इंदौर के तेजी से विकसित हो रहे और घनी आबादी वाले खजराना क्षेत्र के लिए 100 बेड वाले सिविल अस्पताल को मंजूरी दी थी। इस अस्पताल से खजराना, मूसाखेड़ी, तेजाजी नगर, बिचौली हप्सी सहित आसपास के क्षेत्रों के 3 लाख से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं मिलने की उम्मीद थी।

डॉक्टरों, स्टाफ की नियुक्ति - अस्पताल की स्वीकृति के साथ ही 87 पदों को भी मंजूरी दे दी गई थी। इनमें विशेषज्ञ चिकित्सक, मेडिकल ऑफिसर, स्टाफ नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टेक्नीशियन और अन्य सहयोगी कर्मचारी शामिल हैं। हालांकि छह वर्ष बीतने के बाद भी अस्पताल के निर्माण की शुरुआत नहीं हो सकी, क्योंकि विभाग को अब तक उपयुक्त जमीन आवंटित नहीं हो पाई है। इसके बावजूद अस्पताल का नाम और स्वीकृत पद सरकारी पोर्टल पर दर्ज हैं। अस्पताल के नाम पर नियुक्त कर्मचारियों के संबंध में अधिकारियों का कहना है कि सभी कर्मचारियों को फिलहाल पीसी सेठी अस्पताल, हुकुमचंद अस्पताल, संजीवनी क्लीनिक और इंदौर की अन्य सरकारी स्वास्थ्य संस्थाओं से संबद्ध कर कार्य कराया जा रहा है। कागजों में इन कर्मचारियों का संबंध खजराना सिविल अस्पताल से बना हुआ है, जबकि वास्तविकता में अस्पताल का कोई भवन, वार्ड, बिस्तर या मरीज मौजूद नहीं है।

जमीन नहीं तो अस्पताल नहीं बना - उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ल ने इस मामले में कहा कि प्रारंभिक प्रस्ताव समय के साथ बदला था। उनके अनुसार, पहले यह एक अर्बन प्राइमरी हेल्थ सेंटर था, जिसे बाद में 50 बेड के सिविल अस्पताल के रूप में उन्नत करने का निर्णय लिया गया। लेकिन, उपयुक्त जमीन उपलब्ध नहीं होने के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं हो पाया। उन्होंने कहा कि विभागीय पोर्टल पर स्वीकृत पद दर्ज हैं और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी आवश्यकतानुसार पैरामेडिकल स्टाफ को आसपास के संजीवनी क्लीनिक से संबद्ध कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि 50 बेड वाले अस्पताल के लिए जमीन तलाशने का काम जारी है और कर्मचारियों को फिलहाल इंदौर की अन्य रिक्त जगहों पर समायोजित किया गया है।

सभी मान रहे कि बात सही - मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ माधव हसानी ने भी पुष्टि की कि अस्पताल के साथ सभी पद विधिवत स्वीकृत किए गए थे। उन्होंने कहा कि समय पर सरकारी जमीन उपलब्ध नहीं हो सकी। शहरी क्षेत्र में जमीन का अधिग्रहण कठिन और लंबी प्रक्रिया होने के कारण अस्पताल का निर्माण शुरू नहीं हो पाया। वहीं, कांग्रेस ने पूरे मामले को गंभीर प्रशासनिक लापरवाही बताते हुए इसे संभावित घोटाला करार दिया है। कांग्रेस नेता एवं पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा ने उच्च स्तरीय जांच की मांग करते हुए कहा कि जिस अस्पताल का जमीन पर कोई अस्तित्व ही नहीं है, वहां कर्मचारियों की पोस्टिंग और तबादले होना गंभीर मामला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इस मुद्दे को विधानसभा में प्रमुखता से उठाएगी।

अस्पताल संचालक के 25 लाख लेकर फरार हुए ड्राइवर को पुलिस ने दबोचा

पचमढ़ी में मिली मोबाइल लोकेशन, चोरी की रकम से खरीदी भी की

इंदौर। लसूड़िया थाना पुलिस ने निजी अस्पताल के संचालक की कार से 25 लाख रुपए नकद चोरी कर फरार हुए ड्राइवर और उसके साथी को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपी पचमढ़ी में छिपे हुए थे और वहां से गोवा भागने की तैयारी कर रहे थे। पुलिस ने मोबाइल लोकेशन और अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर दोनों को पकड़ लिया। एसीपी पराग सैनी की टीम ने 30 जून को वृंदावन पैलेस कॉलोनी, निपानिया निवासी निजी अस्पताल संचालक मनीष संघवी के ड्राइवर दीपक सोलंकी और उसके साथी मोहित उर्फ चिंटू यादव को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार, घटना वाले दिन दीपक ने मनीष संघवी से कार में डीजल भरवाने की बात कही थी। इसके बाद वह कार लेकर चला गया और काफी देर तक वापस नहीं लौटा। जब मनीष बाहर पहुंचे तो कार वहीं खड़ी मिली, लेकिन दीपक गायब था। कार में रखा 25 लाख रुपए से भरा बैग भी नहीं था।

साथी को लेकर भागा

यह राशि अस्पताल से बैंक में जमा कराने के लिए निकाली गई थी। अगले दिन मनीष संघवी ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। जांच में सामने आया कि रकम

लेकर फरार होने के बाद दीपक ने अपने साथी मोहित को फोन कर बताया कि उसके हाथ बड़ी रकम लगी है। इसके बाद दोनों कार से पचमढ़ी पहुंच गए और वहां से गोवा जाने की योजना बना रहे थे।

कार में जीपीएस लगा हुआ

पुलिस लगातार आरोपियों की मोबाइल लोकेशन पर नजर रखे हुए थी। जिस कार से दोनों भागे थे, उसमें जीपीएस भी लगा था, जिससे उनकी गतिविधियों का पता लगाने में मदद मिली। पुलिस ने पचमढ़ी पहुंचकर दोनों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में यह भी सामने आया कि आरोपियों ने चोरी की रकम से दो महंगे मोबाइल फोन और कुछ कपड़े खरीद लिए थे। पुलिस अब मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है।

राजा रघुवंशी हत्याकांड की आरोपी सोनम को सुप्रीम कोर्ट ने राहत दी

जमानत बरकरार रखी, मेघालय सरकार की याचिका खारिज की

इंदौर। राजा रघुवंशी हत्याकांड में मुख्य आरोपी सोनम को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई है। वह जेल से बाहर रहेगी। मेघालय सरकार ने उसकी जमानत निरस्त करने याचिका दायर की थी, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। कोर्ट ने यह जरूर कहा कि सोनम जेल से बाहर आ चुकी है, इसलिए हम उसकी जमानत पर रोक नहीं लगाएंगे। हाईकोर्ट के फैसले पर कुछ आपत्तियां भी ली। जमानत याचिका पर सुनवाई जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस शील नागू की अवकाशकालीन पीठ ने शुक्रवार को की। इस दौरान मेघालय सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा- यह सुनियोजित हत्या का मामला है। सोनम ने 4 साथियों के साथ मिलकर राजा की हत्या की, फिर शव को खाई में फेंक दिया था। घटना के

बाद वह भाग गई थी।

टाइपिंग की गलती से बदली धारा- सॉलिसिटर जनरल ने कहा, गिरफ्तारी से जुड़े दस्तावेजों में हत्या की धारा 103(1) की जगह गलती से धारा 403(1) लिख दी गई थी। यह टाइपिंग एरर है। हाईकोर्ट ने इसी आधार पर जमानत दी है। मजिस्ट्रेट ने आरोपी को गिरफ्तारी के आधार समझाए थे।

ट्रांजिट रिमांड देते समय भी इसका रिकॉर्ड मौजूद है। पहले इसी मामले में जमानत मेरिट के आधार पर खारिज हो चुकी थी। बाद में इस तकनीकी गलती को आधार बनाकर राहत दे दी गई। जस्टिस सुंदरेश ने सोनम की तरफ से पेश वकील से पूछा कि गिरफ्तारी के आधार पहले ही बताए जा चुके थे। शुरूआती जमानत याचिकाओं में यह मुद्दा कभी नहीं उठाया गया। सुप्रीम कोर्ट का आदेश का सम्मान करते हैं। शिलांग पुलिस की गलती का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। अब सीबीआई जांच पर भी भरोसा है। विपिन रघुवंशी, मृतक राजा रघुवंशी का भाई।

'एशियन गेम्स' की तैयारी कर रही घुड़सवार से 1.62 करोड़ की ठगी

साइबर पुलिस ने अकाउंट होल्ड कराकर पैसा वापस दिलाया

इंदौर। राज्य साइबर पुलिस ने अंतरराष्ट्रीय स्तर की एक घुड़सवार के साथ हुई 1.62 करोड़ रुपए की साइबर ठगी का मामला 24 घंटे के भीतर सुलझाते हुए पूरी राशि सुरक्षित वापस दिला दी। शुक्रवार को इस कार्रवाई का खुलासा किया गया। साइबर पुलिस के अनुसार, इंदौर निवासी हजेला परिवार की घुड़सवार सितंबर-अक्टूबर 2026 में जापान में होने वाले एशियन गेम्स की तैयारी कर रही हैं। प्रतियोगिता के लिए उन्होंने डेनमार्क की कंपनी से घोड़ा खरीदने का सौदा किया था। इस सौदे के तहत कंपनी के अधिकृत बैंक खाते में 45 प्रतिशत भुगतान भी कर दिया गया था। इस बीच 29 मई 2026 को साइबर ठगों ने कंपनी के डायरेक्टर के नाम से फर्जी ईमेल आईडी बनाकर बैंक खाता बदलने संबंधी ईमेल भेज दिया। ईमेल को वास्तविक मानते हुए खिलाड़ी ने 1 करोड़ 62 लाख रुपए जेपी मॉर्गन बैंक में मौजूद ठगों के खाते में ट्रांसफर कर दिए। घटना की शिकायत मिलते ही साइबर पुलिस अधीक्षक सव्यसाची सराफ ने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके बाद साइबर टीम ने सबसे पहले स्कैमर के जेपी मॉर्गन बैंक खाते को होल्ड कराया। साथ ही अपनी आधिकारिक ईमेल आईडी से बैंक प्रबंधन को विधिक नोटिस भेजा गया। इस तत्काल कार्रवाई का परिणाम यह रहा कि 30 जून तक ठगी गई पूरी 1.62 करोड़ रुपए की राशि शिकायतकर्ता के बैंक खाते में रिफंड करा दी गई। यह पहला अवसर नहीं है, जब इसी खिलाड़ी को बिजनेस ईमेल के जरिए निशाना बनाया गया हो। इससे पहले नवंबर-दिसंबर 2025 में भी उनके साथ फॉड के माध्यम से 3.75 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी हुई थी। उस मामले में भी साइबर सेल ने कार्रवाई करते हुए पूरी राशि वापस दिलाने में सफलता हासिल की थी।

रिटायर्ड पुलिस अधिकारी की बेटी को शादी का झांसा, दुष्कर्म किया

8 दिन बाद जब दोबारा थाने पहुंची तब उसकी रिपोर्ट लिखी

इंदौर। शहर के लसूड़िया थाना क्षेत्र में एक रिटायर्ड वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की बेटी ने ग्वालियर निवासी युवक पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। युवती शुक्रवार को एक बार फिर एफआईआर दर्ज कराने के लिए थाने पहुंची। उसका कहना है कि उसने इसी मामले में 8 दिन पहले भी शिकायत दी थी, लेकिन तब पुलिस ने प्रकरण दर्ज नहीं किया। पीड़िता के अनुसार, करीब एक माह पहले उसकी पहचान एक डेटिंग ऐप के माध्यम से ग्वालियर निवासी सुमित से हुई थी। दोनों के बीच लगातार बातचीत होने लगी। सुमित निजी कंपनियों में मैनपावर सप्लाई का काम करता है और कंपनी के काम से पीथमपुर आया हुआ था।

शादीशुदा ने शारीरिक संबंध बनाए

युवती का आरोप है कि सुमित ने उसे लसूड़िया क्षेत्र के एक होटल में मिलने के लिए बुलाया। वहां उसने शादी का भरोसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। बाद में जब उसने विवाह की बात की तो पता चला कि सुमित पहले से शादीशुदा है। इसके बाद उसने शादी से साफ इनकार कर दिया और उसका फोन उठाना भी बंद कर दिया।

एफआईआर दर्ज नहीं की गई- घटना के बाद युवती ने 8 दिन पहले लसूड़िया थाने में शिकायत दी थी, लेकिन उसके अनुसार उस समय एफआईआर दर्ज नहीं की गई। शुक्रवार को वह दोबारा शिकायत लेकर थाने पहुंची। पुलिस का कहना है कि युवती का आवेदन प्राप्त कर लिया गया है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है। जांच के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दौसा हादसे के दोनों मृतकों की अंत्येष्टि

इंदौर। राजस्थान के दौसा जिले में तीन दिन पहले हुई हादसे में इंदौर की महिला निर्मला गुप्ता और युवती भूमि भोरे की मौत हो गई थी। दोनों के शव शुक्रवार तड़के इंदौर लाए गए। भूमि का अंतिम संस्कार मेघदूत गार्डन के पीछे मुक्तिधाम, निर्मला का रीजनल पार्क मुक्तिधाम पर अंतिम संस्कार किया गया। शवयात्रा में सैकड़ों लोग शामिल हुए थे। निर्मला के शव को बेटे मयंक ने मुखाग्नि दी। निर्मला पति चंद्रप्रकाश के साथ चारधाम यात्रा पर गई थी। यात्रा से लौटते समय वह हादसे का शिकार हो गई थी। उधर, मेघदूत नगर में रहने वाली भूमि का पार्थिव शरीर उनके घर पहुंचा। उन्हें अंतिम दर्शन के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। पड़ोसियों ने बताया कि भूमि खुशी-खुशी चारधाम यात्रा पर गई थीं, लेकिन किसी ने नहीं सोचा था कि वह इस तरह लौटेंगी। मुक्तिधाम में उनके छोटे भाई दक्ष भोरे ने मुखाग्नि दी। निर्मला की दो बेटियां और एक बेटा है। बेटी विदिशा में कलेक्टर, दूसरी ग्वालियर में सरकारी डॉक्टर हैं, जबकि बेटा बेंगलुरु में होंडा कंपनी में कार्यरत है।

नियमों का उल्लंघन करने वाले 10 स्कूल वाहन आरटीओ ने जब्त किए

फायर सेफ्टी, स्पीड गवर्नर व अन्य सुरक्षा व्यवस्था की भी जांच

इंदौर। आरटीओ द्वारा स्कूली बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से छोटा बांगड़दा क्षेत्र स्थित स्कूलों के वाहनों की सघन एवं आकस्मिक जांच की गई। जांच के दौरान नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर 3 स्कूल बसें, 3 ट्रेवलर एवं 4 मैजिक वाहन सहित कुल 10 वाहनों को जब्त किया गया। जांच अभियान के दौरान वाहनों के परमिट, फिटनेस, बीमा सहित अन्य आवश्यक दस्तावेजों का परीक्षण किया गया। साथ ही वाहनों का भौतिक निरीक्षण कर यह भी देखा गया कि वे फिटनेस एवं परमिट की शर्तों का पालन कर रहे हैं या नहीं। निरीक्षण के दौरान फायर सेफ्टी उपकरण, स्पीड गवर्नर तथा अन्य सुरक्षा व्यवस्था की

भी जांच की गई। आरटीओ अधिकारियों ने स्कूली बच्चों एवं उनके अभिभावकों से भी फीडबैक प्राप्त किया। इस दौरान वाहन चालकों द्वारा तेज गति से वाहन चलाने, मोबाइल फोन का उपयोग करने तथा अन्य सुरक्षा संबंधी पहलुओं की जानकारी ली गई।

दिशा-निर्देशों का उल्लंघन

जांच में पाया गया कि कई वाहन स्कूली बच्चों की सुरक्षा से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन कर रहे थे। इसके अलावा तीन वाहनों के परमिट एवं फिटनेस प्रमाणपत्र की वैधता समाप्त हो चुकी थी। मौके पर ही कार्रवाई करते हुए संबंधित 3 बसें, 3 ट्रेवलर और 4 मैजिक वाहनों को जब्त कर लिया गया। इस कार्रवाई में आरटीओ प्रदीप शर्मा, एआरटीओ सुश्री अर्चना मिश्रा, आरटीओ कार्यालय का अमला एवं उड़नदस्ता दल शामिल रहा।

पीएनजी ब्लास्ट से निगम ने पल्ला झाड़ा, न अनुमति दी, न मशीन दी

जिम्मेदारों के खिलाफ हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर

इंदौर। विजय नगर क्षेत्र के सुमन नगर में 23 जून को हुए गैस पाइपलाइन ब्लास्ट मामले में नगर निगम ने हाई कोर्ट में अपनी जिम्मेदारी से इनकार कर दिया है। निगम की ओर से कोर्ट को बताया गया कि न तो बोरिंग की कोई अनुमति जारी की गई थी और न ही निगम ने मौके पर बोरिंग मशीन भेजी थी। नगर निगम के अनुसार बोरिंग मशीन पार्षद बालमुकुंद सोनी द्वारा बुलाई गई थी। हादसे को लेकर अधिवक्ता रितेश ईनाणी ने हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर कर जिम्मेदारों के खिलाफ आपराधिक प्रकरण दर्ज करने और घायलों का निशुल्क उपचार कराने की मांग की है।

मामले की पिछली सुनवाई में कोर्ट झुलसे लोगों के मुफ्त इलाज और गंभीर रूप से घायल युवती को बेहतर उपचार के लिए अहमदाबाद भेजने के निर्देश दे चुका है।

जांच जारी, फिर रिपोर्ट पेश- शुक्रवार को हुई सुनवाई में शासन की ओर से बताया गया कि मामले की पुलिस जांच अभी जारी है और जांच पूरी होने के बाद रिपोर्ट पेश की जाएगी। इस पर कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए पूछा कि जांच आखिर कब तक चलेगी और 13 जुलाई से पहले हर हाल में जांच रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिए। सुनवाई के दौरान हादसे में झुलसे लोगों से निजी अस्पतालों द्वारा उपचार के नाम पर राशि वसूलने का मुद्दा भी उठा। इस मामले में पीड़ित परिवारों ने इंटरविनर बनकर अपना पक्ष रखा है। कोर्ट ने सभी संबंधित पक्षों से कहा है कि वे चाहें तो अपना पक्ष लिखित रूप में भी प्रस्तुत कर सकते हैं। अब इस मामले की अगली सुनवाई 13 जुलाई को होगी, जिसमें पुलिस की जांच रिपोर्ट भी पेश की जाएगी।

पुस्तक समीक्षा

कुमार सिद्धार्थ
समीक्षक

आधुनिक घुमक्कड़ी का दिलचस्प दस्तावेज़

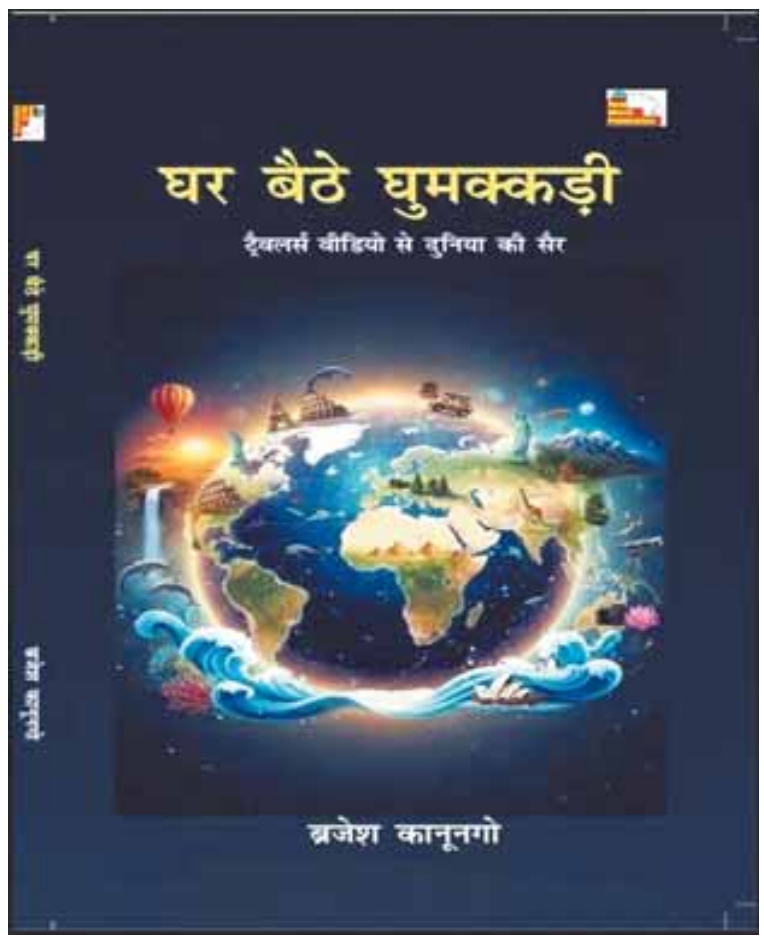

न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली से प्रकाशित यह पुस्तक 217 पृष्ठों की है तथा इसका मूल्य 399 रुपये रखा गया है। पुस्तक का उपशीर्षक दुनिया को जानने की प्रक्रिया में कुछ नोट्स इसकी मूल प्रकृति और उद्देश्य को सटीक ढंग से व्यक्त करता है। ब्रजेश कानूनगो लंबे समय से पत्रकारिता और वैचारिक लेखन से जुड़े रहे हैं। सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक चेतना और समकालीन विषयों पर उनकी सजग दृष्टि उनके लेखन की प्रमुख पहचान है। उनकी भाषा में पत्रकारिता की स्पष्टता है तो साहित्य की आत्मीयता भी। यही गुण इस पुस्तक को सामान्य यात्रा-वृत्तांतों से अलग पहचान देते हैं।

हिंदी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत की परंपरा हमेशा समृद्ध और प्रभावशाली रही है। राहुल सांकृत्यायन, अमृतलाल वेगड़, विद्यानिवास मिश्र और निर्मल वर्मा जैसे लेखकों ने यात्राओं के बहाने केवल भूगोल नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति, प्रकृति और मनुष्य के अंतर्मन को भी समझने का प्रयास किया। बदलते समय में तकनीक ने यात्रा की परिभाषा को नया आयाम दिया है। अब दुनिया केवल रेल, सड़क और हवाई जहाज से नहीं, बल्कि मोबाइल स्क्रीन, इंटरनेट और यूट्यूब के माध्यम से भी देखी और महसूस की जा रही है।

वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक और साहित्य-संवेदनशील लेखक ब्रजेश कानूनगो की नई पुस्तक 'घर बैठे घुमक्कड़ी' हिंदी यात्रा-साहित्य में बिल्कुल नए प्रयोग की तरह सामने आती है।

न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली से प्रकाशित यह पुस्तक 217 पृष्ठों की है तथा इसका मूल्य 399 रुपये रखा गया है। पुस्तक का उपशीर्षक 'दुनिया को जानने की प्रक्रिया में कुछ नोट्स' इसकी मूल प्रकृति और उद्देश्य को सटीक ढंग से व्यक्त करता है।

ब्रजेश कानूनगो लंबे समय से पत्रकारिता और वैचारिक लेखन से जुड़े रहे हैं। सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक चेतना और समकालीन विषयों पर उनकी सजग दृष्टि उनके लेखन की प्रमुख पहचान है। उनकी भाषा में पत्रकारिता की स्पष्टता है तो साहित्य की आत्मीयता भी। यही गुण इस पुस्तक को सामान्य यात्रा-वृत्तांतों से अलग पहचान देते हैं।

यह पुस्तक पारंपरिक यात्रा संस्मरण नहीं है। लेखक ने स्वयं स्वीकार किया है कि कोरोना काल और बदलती परिस्थितियों में उन्होंने ÷घर बैठे÷ दुनिया की यात्राएँ कीं। यूट्यूब, ट्रैवल व्लॉग्स और डिजिटल माध्यमों के जरिए उन्होंने विभिन्न देशों, संस्कृतियों, प्राकृतिक स्थलों और मानवीय जीवन को देखा-समझा और उन्हीं अनुभवों को पुस्तक में शब्द दिए।

यहीं से यह पुस्तक अपने समय की एक नई अवधारणा प्रस्तुत करती है- 'डिजिटल घुमक्कड़ी'। यह विचार कि बिना किसी स्थान पर भौतिक रूप से पहुंचे भी मनुष्य दुनिया को समझ सकता है, आज के तकनीकी युग का बड़ा सच है। ब्रजेश कानूनगो ने इस अनुभव को केवल सूचनात्मक नहीं रहने दिया, बल्कि उसे संवेदनात्मक और वैचारिक स्वरूप भी प्रदान किया है।

पुस्तक का विषय-विस्तार अत्यंत व्यापक है।

पुस्तक की एक बड़ी विशेषता यह है कि लेखक केवल दृश्य-वर्णन तक सीमित नहीं रहते। वे हर विषय के पीछे छिपे सामाजिक, वैज्ञानिक और मानवीय पक्ष को भी सामने लाते हैं। उदाहरण के लिए 'सूर्योदय और सूर्यास्त' वाले अध्याय में वे केवल प्रकृति की सुंदरता का वर्णन नहीं करते, बल्कि उसके वैज्ञानिक कारणों और मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य पर उसके प्रभाव की भी चर्चा करते हैं। इसी तरह ग्रहों और तारों के निर्माण से जुड़े अध्यायों में विज्ञान को बेहद सरल और रोचक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक का एक महत्वपूर्ण पक्ष आधुनिक ट्रैवल व्लॉगिंग संस्कृति पर लेखक की टिप्पणियाँ हैं। लेखक ने विस्तार से बताया है कि किस प्रकार यूट्यूब और डिजिटल मीडिया ने यात्रा को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब केवल संपन्न वर्ग ही नहीं, बल्कि सामान्य लोग भी दुनिया के दूरस्थ हिस्सों को देख और समझ सकते हैं। पुस्तक में हरीश बाली, वरुण वागीश, माउंटेन ट्रेकर, नोमैडिक इंडियन और अन्य भारतीय ट्रैवल व्लॉगर्स का उल्लेख करते हुए लेखक ने डिजिटल युग के इस नए सांस्कृतिक परिवर्तन को रेखांकित किया है।

'काउच सर्फिंग और हिच हाइकिंग' जैसे अध्याय पुस्तक को और अधिक समकालीन तथा जीवंत बनाते हैं। लेखक इन माध्यमों के जरिए केवल यात्रा तकनीकों की जानकारी नहीं देते, बल्कि यह भी बताते हैं कि दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग किस तरह एक-दूसरे पर भरोसा कर नए सांस्कृतिक रिश्ते बना रहे हैं। इन अध्यायों में मानवीय आत्मीयता और वैश्विक नागरिकता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भाषा की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत सहज, आत्मीय और संवादधर्मी है। लेखक पाठकों पर ज्ञान का दबाव नहीं डालते, बल्कि उन्हें अपने साथ यात्रा पर ले चलते हैं। कई जगह ऐसा लगता है जैसे कोई मित्र बैठकर दुनिया के रोचक अनुभव साझा कर रहा हो। यही शैली पुस्तक को बोझिल होने से बचाती है।

बाल कविता

गर्मियों के फल

प्रगति त्रिपाठी

गर्मी आई गर्मी आई
साथ रसीले फल है लाई
मिन्नी खाएं मीठे तरबूज
मोनू खाएं पके अमरूद
गोलू को है आम से प्यार
खाएं भर - भर के वो थाल
रश्मि को प्यारे खरबूज
मिलकर खाएं सबके साथ
सोनू का भी मन ललचाए
छुपकर वह जामुन है खाएं
रसगुल्ले सी मीठी मीठी
लीची तो मुंह में घुल जाए
बच्चों तुम भी फल ये खाना
गर्मीयों में मौज मनाना।

000

अखबार

- रामेश्वरम तिवारी

नवीस ये खबर लाए हैं,
रहबर राहजनी पर उतर आए हैं।

पूछो ना हमसे कि क्या गुज़री है,
हम नरक का कर सफ़र आए हैं।

जबभी खुदगर्जों से पाला पड़ा है,
वो भूल से भी नहीं नज़र आए हैं।

निःस्वार्थ नेह को दिल तरस रहा,
जबसे रोटी खातिर शहर आए हैं।

हमारे हौसलों को दाद दीजिए,
तैरकर अम्बुधि पार कर आए हैं।

अवध में राम-मंदिर में चंदा चोर,
रावण बनकर वैदेही हर आए हैं।

लघुकथा

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

प्रो. कक्कड़ को होम टाउन में ट्रांसफर आये तकरीबन दो साल हो गये थे। स्टडी रूम न होने से उनकी तमाम किताबें अब तक कार्टन में ही पैक थीं। एक ठेकेदार को पूरे काम का ठेका दे दिया। इसमें मजदूरों के समय कुसमय की निगरानी और जलपान आदि से कोई सरोकार नहीं। आयें काम करें और अपनी मजदूरी ठेकेदार से लें। काम शुरू हो गया। जेठ की तपिश और खुले में तीसरी मंजिल पर निर्माण कार्य। पुरुष राजगीर और पत्नी ईंट बालू ढोती, मसाला बनाती। अपने ठौर ठिकानों से रोटी पानी लाते। प्लास्टिक की बोतलों का पानी खौलने लगता। कोमल मजदूरिन ने हिम्मत की, 'मैडम थोड़ा ठंडा पानी मिल जायेगा?'समृद्धि और संवेदना शत्रु होती हैं। 'क्यों, घर से नहीं लाई? तुम्हारे लिए ठेका ले रखा है?' कोमल पंद्रह ईंटे सर पर रखे ऊपर चढ़ गई और मैडम नीचे।

जेठ का पूरा महीना उस शहर में भंडारों में निकलता। मंगलवार और शनिवार भंडारे ज्यादा और खाने वाले कम। कभी इनमें पूड़ी सब्जी मिलती थी परंतु नवाचार ने इन्हें विविध व्यंजनी बना दिया। भाग दौड़ भरी जिंदगी में समय कहां। सबको लगता कि वह भी शिरकत करे। आफिस प्रतिष्ठान गली मोहल्लों और हाकिम हुक्कामों के सौजन्य से भण्डारे। एक कुंतल या दो कुंतल अन्न अथवा सौ - दो सौ लोगों के शरबत के भण्डारे के ठेके देने और लेने वाले। मीन्यू और धनराशि निश्चित तो आयोजक निश्चिंत हो जाते। कक्कड़ यहां के लिए नये थे परंतु सामाजिक प्रतिष्ठा तो देखनी ही पड़ती है। दिन भर के शरबत भण्डारे का ठेका दे दिया। जो कोई निकलता उसे पकड़ पकड़ कर ठंडा शरबत पीने का आग्रह और पुण्य का ठेका।

'कोमल आज तू भी शरबत पी लेना।' मैडम ने आदेश की भाषा में अहसान जताया।

मजदूरिन ईंटें सर पर रखे पसीने से तर बतर ऊपर चढ़ रही थी।

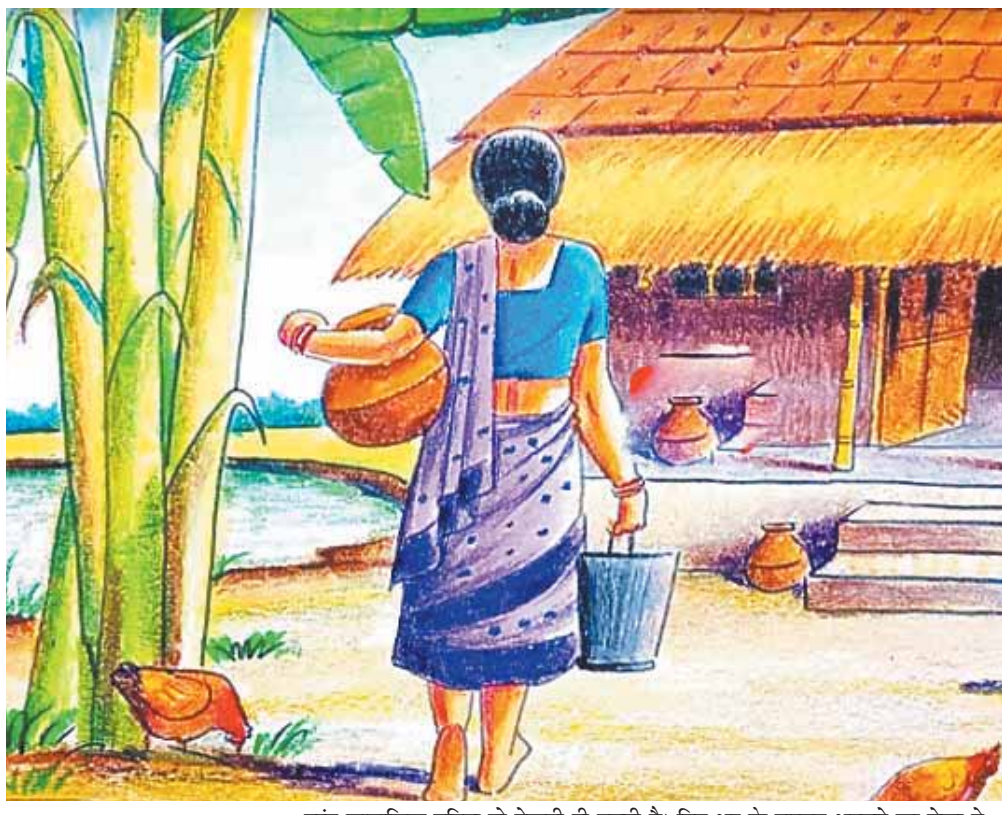

मेरा खुदा के साथ

कमलेश कुमार दीवान

मेरा खुदा के साथ कोई राब्ता न था
उसका भी मेरे साथ कोई वास्ता न था।

कुछ लोग इबादत से पाते हैं बहुत कुछ
मेरे लिए वहां का भी कोई रास्ता न था।

सबके लिए दुआएं करते रहे कुछ लोग
मेरी दुआओं को वो कोई मानता न था।

वो खुश हुआ जमीं पे झुका देखकर मुझे
उसको पता है मुझको कोई जानता न था।

क्या चाहते है सब उसे मालूम है 'दीवान'
सबकी मुरादें थी जिन्हें कोई मांगता न था।

लघुकथा

देवेन्द्रसिंह सिसौदिया

खारापन

क्यों सुनीता, तूने सब्ज़ी में नमक नहीं डाला? मालकिन ने पहला कौर मुंह में रखते ही नाराज़ होकर पूछा।

सब्जी काटती हुई सुनीता ने शांत स्वर में कहा, मालकिन, नमक तो डाला था।

मालकिन ने फिर सब्ज़ी चखी और बोली, अजीब बात है, आजकल नमक में उतना खारापन ही नहीं रहा।

सुनीता के हाथ एक पल को रुक गए। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान उभरी। वह बोली, हाँ मालकिन, अब खारापन नमक में नहीं, लोगों में बढ़ गया है।

एक पिता का अपनी बेटी के नाम पत्र..

पत्र

डॉ.निमित ओझा

(कुछ वर्षों पूर्व तक लडकियों को तीन' स'अर्थात स्वीकार करना, सहन करना और समर्पण करना घुट्टी में पिलाया जाता था लेकिन अब तीन 'स' की जगह तीन 'आ' अर्थात आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता की महत्ता पर फोकस डालती गुजराती कहानी का हिन्दी भावानुवाद।)

प्रिय डीकरी (बेटी)

आशा है, तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगी। आइंस्टीन ने कहा है-'अगर तुम अपना जीवन खुशी से बिताना चाहती हो तो उसे व्यक्ति से नहीं बल्कि प्रवृत्ति (हॉबी) से जोड़ना'। तुम्हारा लक्ष्य, तुम्हारा स्वप्न कोई व्यक्ति नही बल्कि कोई खास प्रवृत्ति होनी चाहिए। तुम्हारी कोई प्रिय सखी, परिवार या साथी तुम्हें धोखा दे सकता है? लेकिन तुम्हारी प्रवृत्ति तुम्हें कभी धोखा नहीं देगी चाहे वह सेवा हो, चाहे कला, नृत्य, संगीत या लेखन हो। तुम्हारी ज़िंदगी के निर्णय तुम्हें ही करना है। रास्ते में तुम्हें कई लोग मिलेंगें। तुम्हारी सहायता करेगें, तुम्हारे साथ चलेंगे लेकिन तुम्हारा रास्ता तुम्हें ही तय करना है।

प्यारी बेटी! यह जगत एक पुरूष के आकर्षण से कहीं अधिक है। कोई भी तुम्हारी पीड़ा, यातना और कष्ट को कम तो कर सकता है पर उसे भोग नही सकता। तुम्हारी ज़िंदगी की विशालता का अनुभव तुम ही कर सकती है कोई पुरुष नहीं। इसलिए इसे किसी पुरुष के आसपास केंद्रित मत करना। तुम्हारी सुंदरता और स्त्रीत्व की कदर केवल तुम ही कर सकती हो।

पुरुष द्वारा दिया गया महत्व क्षणिक है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब पर मिलने वाले लाइक्स, फॉलो और इमोजी तुम्हारे महत्व को निर्धारित नहीं करते। इन पर भरोसा करोगी तो दुखी ही होओगी। आते क्षण में उसका महत्व बदल सकता है लेकिन उसके लिए तुम्हारे अंदर का कुछ भी नहीं बदलना चाहिए।

बेटा! यह पूरा आकाश तुम्हारा है। इसमें उड़ने के लिए किसी और के सर्टिफिकेट या फ्लाइंग लाइसेंस की जरूरत नही है। किसी अयोग्य, अकर्मण्य व्यक्ति में अपना महत्व खोजती रही तो पूरा जीवन स्वीकार की खोज में कम पड़ जाएगा।किसी पुरुष का अटेन्शन पाने के लिए तुम्हारा स्वयं का अस्तित्व न खो जाए, यह ध्यान रखना।

प्रिय बेटा! अपना समय ब्यूटी पार्लर में इन्वेस्ट करने की बजाय पुस्तकों में इन्वेस्ट करना। ब्यूटी पार्लर की चमक फीकी पड़ सकती है लेकिन पुस्तकों की चमक आजीवन तुम्हारे साथ रहेगी। अपना व्यक्तित्व वैसा ही बनाना , जैसा तुम चाहती हो। अपने सपनों को जीवित रखने के लिए तुम्हें किसी पर निर्भरता की जरूरत नही।

बेटी! महान दार्शनिक टॉलस्टॉय ने कहा है कि- एक विद्वान पुरुष की सबसे अहम् जरूरत एक बुद्धिशाली स्त्री की कंपनी है। दुनिया के सफर पर निकल पडना। अपनी जाति का उद्धार करना।कान में मधुर संगीत और हाथ में प्रिय पुस्तक होगी तो जीवन कभी बोरिंग नही लगेगा। मुश्किलें आएगी, संघर्ष आएगा लेकिन यदि तुम्हारी प्रवृत्ति सेवा है, कला है, नृत्य है, संगीत है, पुस्तकें हैं तो ये तुम्हें जीवन में टिके रहने में मदद करेंगीं। कितनी स्त्रियाँ, पुरुष अपने घर, अपने कुटुम्ब बदलते हैं पर अपने सपने नही। अभी से एक प्रिय एक्टिविटी या कोई हॉबी अपनाना।तुम व्यस्त रहोगी, एक्टिव रहोगी और तुम्हारा सम्मान बना रहेगा।

शेष अगले पत्र में....

तुम्हारा पापा

(अनुवाद- कुसुम जैन शाजापुर)

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारतीय कला, रॉयल अकादमी और ईवी हैवेल

रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स, बर्लिंगटन हाउस लंदन जो एक कला संस्थान है, जिसकी स्थापना 1768 में हुई और जिसके पहले अध्यक्ष जोशुआ रेनाल्ड्स बनाए गये। जहां के बनाए नियम एवं कार्य शैली या पाठ्यक्रम के आधार पर ही आगे चलकर भारतीय कला संस्थानों को खोला गया, जहां उसी आधार पर बहुत समय तक चित्र बनते रहे जिस पर आगे चर्चा होनी है फिलहाल इन सभी प्रक्रियाओं से पूर्व कौन-कौन से कलाकार भारत की धरती पर तमाम लालचों के साथ आये और कुछ तो फायदों के साथ वापस लौटे तो कुछ को निराशा ही हाथ लगी। रॉयल एकादमी में शुरुआत के कुछ समय बाद ही सदस्य के रूप में जोहान ज़ोफ़नी को भी जोड़ा गया। 13 मार्च 1733 में फ्रैंकफर्ट में जन्में जोहान अधिकतर अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के ही चित्र बनाया करते थे, नाटकीय चित्रों के लिए भी वो खूब प्रसिद्ध थे। उनके अधिकतर कृतियों में बातचीत करती हुई आकृतियां ही नजर आती थीं। 'ट्रिब्यूना ऑफ द उफ़ीजी' उनकी महत्वपूर्ण कृति है।

भारत के लोग जब भयावह स्थिति से गुजर रहे थे, अंग्रेजों और राजाओं के बीच हो रहे उठापटक से जूझ रहे थे, लोगों में रह-रहकर जन चेतना के ज्वार उठ रहे थे।

ऐसे ही समय में अंग्रेजी कलाकारों का भारत आगमन चालू हो चुका था। उनके यहां आने का कारण भी बिल्कुल ही साफ था। अंग्रेजी मानसिकता की यदि बात करी जाय तो सिद्ध हो जाएगा कि वो बिना फायदा देखे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते थे। फिर भी यदि भारतीय आधुनिक या समकालीन कला के विकास की बात देखी जाए तो यहां भी वहीं से शुरू करना पड़ेगा। हालांकि समय में अंतर जरूर देखा जा सकता है पर प्रक्रिया लगभग हर जगह एक सी ही है। भारतीय कला धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक विषयों में ही जकड़ी हुई थी या फिर राजाओं के दिए विषयों तक सीमित थी जबकि आधुनिक भारतीय कला में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला।

रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स, बर्लिंगटन हाउस लंदन जो एक कला संस्थान है, जिसकी स्थापना 1768 में हुई और जिसके पहले अध्यक्ष जोशुआ रेनाल्ड्स बनाए गये। जहां के बनाए नियम एवं कार्य शैली या पाठ्यक्रम के आधार पर ही आगे चलकर भारतीय कला संस्थानों को खोला गया, जहां उसी आधार पर बहुत समय तक चित्र बनते रहे जिस पर आगे चर्चा होनी है फिलहाल इन सभी प्रक्रियाओं से पूर्व कौन-कौन से कलाकार भारत की धरती पर तमाम लालचों के साथ आये और कुछ तो फायदों के साथ वापस लौटे तो कुछ को निराशा ही हाथ लगी। रॉयल एकादमी में शुरुआत के कुछ समय बाद ही सदस्य के रूप में जोहान ज़ोफ़नी को भी जोड़ा गया। 13 मार्च 1733 में फ्रैंकफर्ट में जन्में जोहान अधिकतर अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के ही चित्र बनाया करते थे, नाटकीय चित्रों के लिए भी वो खूब प्रसिद्ध थे। उनके अधिकतर कृतियों में बातचीत करती हुई आकृतियां ही नजर आती थीं। 'ट्रिब्यूना ऑफ द उफ़ीजी' उनकी महत्वपूर्ण कृति है।

1783 से लगभग पांच वर्षों तक ज़ोफ़नी भारत में ही रहे जहां गवर्नर जनरल और नवाबों के चित्र बनाए। ऐतिहासिक चित्रों का भी निर्माण उन्होंने किया जबकि लंदन में ही जन्मे चित्रकार टिली केटल ने भी भारत में काफी चित्र बनाए। 1768 में भारत के मद्रास में आकर लगभग दो साल वहीं रहते हुए लोगों के चित्र बनाए। इन सभी के चित्रों में शैलीगत परंपराएं विद्यमान हैं और वही घिसे-पिटे विद्यालयी सिद्धांतों के आधार पर ये सभी आगे बढ़ते रहे हालांकि गौर करने वाली बात तो ये है कि इन सभी के यहां आने से भारतीय कला एवं कलाकारों पर कोई विशेष प्रभाव तो नहीं पड़ा पर यात्रा इन सभी ने लगातार की है। टिली केटल बाद में कलकत्ता आ गये और वहां भी चित्रों का निर्माण ही करते रहे। विलियम होजेस के यात्रा की चर्चा भी है जो 1778 में भारत की यात्रा पर आए । कलाकार थामस डैनियल के बनाए चित्र अधिक मात्रा में देखने को मिलते हैं अपने भतीजे विलियम डेनियल के साथ मिलकर थॉमस ने भारत में खूब यात्राएं की और खूब चित्र बनाए कुछ चित्रों के साथ तो दोनों के नाम साथ में ही आते हैं। इंग्लैंड में जन्मे एवं रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स से प्रशिक्षित हुए थॉमस भी सभी की तरह धन और प्रसिद्धि के लालच में ही भारत की ओर रुख किये थे। थॉमस के बनाए चित्र बड़े ही शांत और स्थिर नजर आते हैं। उन्होंने ओल्ड कोर्ट हाउस कलकत्ता, शिवाला घाट बनारस, ताजमहल जैसे प्रसिद्ध स्थलों के दृश्य चित्र बनाए जिनमें बड़ी ही बारीकता से काम किया गया है। विलियम भी इसी यात्रा में शामिल थे फलतः विषय लगभग समान ही है हां इनके कुछ कृतियों में रंग का हल्का सा पुट दिखाई पड़ता है जो थॉमस के यहां कम ही नजर आता है।

कलाकारों में सृजन और स्वतंत्रता को लेकर उधेड़बुन की स्थिति हमेशा बनी रहती है। कुछ हवा के साथ चलना पसंद करते हैं तो कुछ उसके विरुद्ध अपना नया और संघर्षशील मार्ग बनाते हैं। उन्नीसवीं सदी के अंत से विद्रोह की भावना वैश्विक स्तर पर स्पष्टतः दिखने लगती है तथा उसके परिणामस्वरूप अच्छे-बुरे दौर भी दिखने लगे थे। अस्वीकृत कलाकारों की प्रदर्शनी एक उदाहरण बन चुकी थी। हर तरफ संघर्ष के नये रास्ते खुल रहे थे कला में बहुत कुछ नया हो रहा था जबकि भारतीय कला शिक्षा में अंधानुकरण जारी था। यहाँ कला विद्यालय रॉयल अकादमी के ही नक्शेकदम पर चल रहे थे। परतंत्रता के बेड़ियों में जकड़े होने की वजह से अस्तित्व खो चुकी

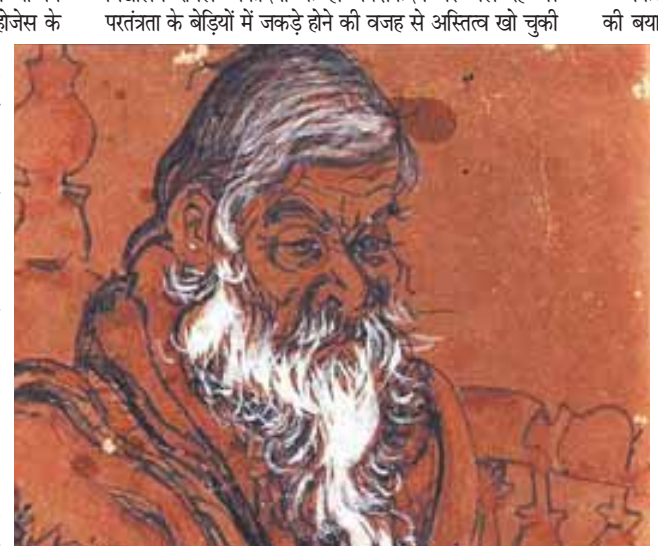

भारतीय कला पर विदेशी तकनीक थोप कर एक अलग ही तरह का माहौल तैयार किया जा रहा था। हालांकि छात्रों को कला में कुछ करने के लिए कला के आधार भूमि की जरूरत तो थी ही इससे बचा नहीं जा सकता था पर अपने आधार और अस्तित्व को भूल जाने के शर्त पर ये सही नहीं था। बची-खुची कला से भारतीयता नदारद थी।

किसी से उम्मीद लगाना भी बेमानी ही था पर जल्द ही बदलाव की बयार बही, अंग्रेजी प्रशासक, कलाकार, कला समीक्षक तथा कला परिवार से संबंधित अर्नेस्ट बिनफिल्ड हैवेल जो 1884 से ही मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में अपनी सेवा दे रहे थे और कला में हो रहे अंधानुकरण से दुखी भी थे, कुछ बदलाव भी चाहते थे पर अकेले संभव नहीं हो पा रहा था। हैवेल का तबादला 1896 में कलकत्ता के कला विद्यालय में हो गया। हैवेल बदलाव के बयार में प्रमुख साबित हुए।

16 अगस्त 1854 में निजी विद्यालय के रूप में कलकत्ता में जिस कला विद्यालय की शुरुआत हुई, जिसके स्थान को कई बार बदला गया। जहाँ पर अभी- अभी हैवेल प्राचार्य बनकर आये थे, का योगदान आगे चलकर भारतीय कला में काफी सराहनीय हो गया। हैवेल की मुलाकात अबनींद्र नाथ टैगोर से हुई। आगे चलकर इस जोड़ी ने पूरे कला परिदृश्य को ही बदल कर रख दिया, सोई हुई कला भावना को जगा कर रख दिया लेकिन यहाँ तक पहुंचने के पूर्व के घटनाओं पर भी दृष्टिपात जरूरी है। 1864 में विद्यालय सरकार के अधीन हो गया। समय-समय पर विद्यालय प्रमुख भी बदलते रहे पर हैवेल के पूर्व, कार्य कम ही दिखता है।

ई. बी. हैवेल ने भारतीय कला को ज्यादा स्वतंत्रता प्रदान की। छात्र जो अब तक अकादमिक बंधनों में बंधे हुए थे स्वतंत्र महसूस करने लगे पर चुनौती और बढ़ गई, हैवेल भारतीय कला एवं थाती के बहुत बड़े समर्थकों में थे। भारतीय कला शिक्षा को नये तरीके से परिभाषित करने हेतु हैवेल ने लगातार काम किया। काम संघर्षों वाला था एक तरफ जहाँ अंग्रेज अधिकारी भारतीयों एवं उनके संस्कृतियों पर कुठाराघात करते हुए अपना वर्चस्व कायम करने पर लगे हुए थे। पाश्चात्य को भारतीय संस्कृति पर भारी सिद्ध करने में लगे हुए थे। शासन तो था ही कला एवं संस्कृति पर भी शासन के फिराक में थे बल्कि काफी हद तक कामयाब भी। पर इन सभी से इतर हैवेल भारतीय कलाकारों को भारतीयता से परिचित करवाने के प्रयास में लगातार काम करते रहे। अजंता जैसी थाती पर गर्व करना सिखलाते रहे और उससे बहुत कुछ सीखने हेतु कला छात्रों को प्रेरित कर रहे। जिसका असर अंग्रेज अधिकारियों पर क्या रहा होगा अनुमान लगाया जा सकता है जबकि इधर भारतीय उनपर अपनी तकनीकी हम सभी को न सिखाने का लांछन भी लगा रहे थे। अच्छाई पर भी संदेह का ग्रहण लगा हुआ था। हैवेल को दोनों तरफ से विरोध झेलना पड़ रहा था पर मार्ग भी बनाना था फलतः इन सभी बातों से वो निराश नहीं हुए। हैवेल भारतीय संस्कृति को बहुत ही महत्वपूर्ण एवं महान मानते थे। उनका मानना था कि भारतीय कला के आगे पाश्चात्य कला कहीं भी नहीं ठहरती। हैवेल लगातार कला छात्रों के संशय युक्त मन में अपने कला के प्रति आत्मविश्वास जगाते रहे।

भारतीय कला पर वो लगातार अध्ययन करते रहे फलस्वरूप कई पुस्तकें उन्होंने भारतीय कला एवं उसके परिप्रेक्ष्य पर लिखी। लंदन से प्रकाशित द स्टूडियो पत्रिका में प्रकाशित उनके लेख में भारतीय कला पर गहनता से अध्ययन दिखाई देता है।

भारतीय कला को पुनर्परिभाषित तथा पुनर्जिवित करने हेतु अबनींद्र के साथ ने धीरे धीरे ही सही उन्हें मजबूत बनाया।

देवास को कथक में विश्व फलक पर मान दिलाने वाले कलाकार

श्रद्धांजलि : पद्मश्री पंडित प्रताप पवार

मोहन वर्मा

लेखक पत्रकार हैं।

देवास एक कला नगरी है । जीवन को आनंद से भर देने वाली साहित्य,चित्रकला,नृत्य,और संगीत जैसी रसधारा यहाँ सतत बहती रहती है । तात्कालिन रियासत काल में संगीत के नामचीन उस्ताद रजब खा,अमानत अली खा ख्यात गायिका लता मंगेशकर के गुरु रहे हैं । संगीत में ही पद्म विभूषण पंडित कुमार गंधर्व का नाम गर्व से लिया जाता है। ऐसे ही कथक कला गुरु पंडित प्रताप पवार थे जिनका दुखद अवसान 25 जून 26 को हो गया।

20 मई 1942 को देवास में जन्मे प्रताप पवार-कथक नृत्य के ऐसे कलाकार थे जिन्होनें भारत से लेकर यूरोप, अमेरिका और एशिया तक उन्होंने कथक की गरिमा का परचम लहराया। विगत 25 जून को भारतीय शास्त्रीय नृत्य जगत ने अपने उन विरल रत्नों में से एक को खो दिया है, जिन्होनें कथक को केवल मंचीय कला नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा का जीवंत स्वरूप बना कर विश्व फलक पर देवास और देश को गौरवांवित किया पद्म विभूषण पंडित बिरजू महाराज के अग्रणी शिष्यों में शामिल, पद्मश्री से सम्मानित कथकाचार्य गुरु पंडित प्रताप पवार (एमबीई) का 84 वर्ष की आयु में निधन भारतीय सांस्कृतिक जगत के लिए एक ऐसी क्षति है,जिसकी भरपाई संभव नहीं।

देवास से उनका जुड़ाव उन्हें बार बार अपने शहर लेकर आता था । सौ वर्ष पुराने शिव छत्रपति गणेश मंडल के बैनर तले वे जनवरी 2016 में अपने विदेशी शिष्यों के साथ देवास आए थे और बार बार देवास आने की इच्छा रखते थे । प्रताप पवार ने बहुत कम आयु में यह तय कर लिया था कि नृत्य ही उनके जीवन का मार्ग होगा। कत्थक के शौक के कारण अपने मित्रों,रघुनाथराव तापकीर, खानवीलकर जी के साथ होस्टल से गाहे-बगाहे गायब हो जाने पर उन्हें हॉस्टल वार्डन जगताप सर से मार भी खाना पड़ती थी । कर्नल शिव प्रसाद पंडित ने उन्हें कथक सीखने इंदौर जाने को न केवल प्रेरित किया बल्कि जो मदद की उसे वे हमेशा याद करते थे ।

प्रताप पवार की कथक के प्रति दीवानगी और कला की यही साधना उन्हें कथक सम्राट बिरजू महाराज के सान्निध्य तक ले गई। पंडित बिरजू महाराज के गंडा-बाँध शिष्य बनने का गौरव केवल कुछ चुनिंदा कलाकारों को ही प्राप्त हुआ। गुरु ने जिन मूल्यों, सौंदर्यबोध और परंपराओं को उन्हें सौंपा, प्रताप पवार ने उन्हें पूरी निष्ठा और गरिमा के साथ जीवनभर आगे बढ़ाया। उनकी प्रस्तुतियाँ तकनीकी कौशल और भावाभिव्यक्ति का अद्भुत संगम थीं।जटिल पद संचालन हो,विलक्षण लयकारी, मुखाभिनय की सूक्ष्मता या कथा-वाचन की गरिमा–हर प्रस्तुति दर्शकों के मन पर अमिट छाप छोड़ जाती थी। वे केवल नृत्य नहीं करते थे, बल्कि हर बार भारतीय संस्कृति की आत्मा को मंच पर साकार कर देते थे।

यूनाइटेड किंगडम में उन्होंने कथक शिक्षा का एक सशक्त केंद्र स्थापित किया, जो यूरोप में इस कला के प्रमुख संस्थानों में गिना जाता है। उनके अनेक शिष्य आज विश्वभर में कथक के प्रतिष्ठित कलाकार और शिक्षक हैं, जो अपने गुरु की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। यही किसी गुरु की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है कि उसकी साधना उसके शिष्यों में जीवित रहे।

2022 में गुरु पंडित बिरजू महाराज के निधन के बाद उन्होंने अपने गुरु की शिक्षाओं, रचनाओं और लखनऊ घराने की विशिष्ट शैली को उसी समर्पण के साथ आगे बढ़ाया। यही उनके जीवन का सबसे बड़ा संकल्प था। प्रताप पवार का विश्वास था कि कथक केवल सीखा नहीं जाता, उसे जिया जाता है। वे निरंतर रियाज़, गुरु के प्रति श्रद्धा, विनम्रता और अनुशासन को कलाकार का सबसे बड़ा आभूषण मानते थे।

भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रचार-प्रसार में उनके असाधारण योगदान के लिए ब्रिटेन सरकार ने उन्हें मेंबर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (MBE) से सम्मानित किया, जबकि भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री अलंकरण प्रदान कर भारतीय शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में उनके अप्रतिम योगदान को राष्ट्रीय सम्मान दिया। आज उनके निधन पर केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर का कला समुदाय शोकाकुल है। उनके शिष्य, सहकर्मी, संगीतज्ञ और कला-प्रेमी उन्हें एक विलक्षण कलाकार के साथ-साथ एक सज्जन, विनम्र और उदार इंसान के रूप में याद कर रहे हैं। गुरु पंडित प्रताप पवार का पार्थिव अस्तित्व भले ही अब हमारे बीच नहीं है, किंतु कलाकार कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते।

वे अपने शिष्यों की थाप में, घुँघरुओं की अनुगूँज में, अपनी रचनाओं की लय में और आने वाली पीढ़ियों की साधना में सदैव जीवित रहते हैं। जब भी किसी मंच पर कथक की थाप गूँजेगी, उसमें गुरु पंडित प्रताप पवार की साधना, उनकी विनम्रता और उनकी अमर विरासत की प्रतिध्वनि अवश्य सुनाई देगी। यही एक सच्चे कलाकार की अमरता है।

विश्व बैडमिंटन दिवस

विजय रांगणेकर

'रेज-ए-रैकेट' के मन रहा है विश्व बैडमिंटन दिवस

'वर्ल्ड बैडमिंटन डे' दुनिया भर में 5 जुलाई को मनाया जाता है। बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन इस साल के जश्न को 'रेज़-ए-रैकेट' थीम के साथ मना रहा है। थीम 'रेज़-ए-रैकेट' का मतलब दोस्तों, परिवार और सोसाइटी को इस खेल में शामिल होने और इस खेल को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसका लक्ष्य जागरूकता बढ़ाना और दुनिया भर के लोगों को सक्रिय और स्वस्थ जीवन शैली अपनाते हुए इस खेल का आनंद लेने के लिए प्रेरित करना है।

बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन ने पहली बार 5 जुलाई 2022 को वर्ल्ड बैडमिंटन डे मनाया था। यह दिन 5 जुलाई 1934 को इंटरनेशनल बैडमिंटन फेडरेशन, जो अब बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन के नाम से जाना जाता है, की स्थापना की याद में मनाया जाता है। हर साल मनाया जाने वाला यह दिन इस ऐतिहासिक उपलब्धि को मान्यता देता है और नई तरह की बैडमिंटन गतिविधियों के ज़रिए लोगों और समुदायों को एक साथ लाता है। बैडमिंटन खेलने से आप दूसरों से ज़्यादा स्वस्थ एवं अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं। नियमित रूप से बैडमिंटन खेलने से आप 6 साल ज़्यादा जी सकते हैं। दूसरे खेलों की तुलना में ज़्यादा। एक स्टडी से पता चलता है कि बैडमिंटन हृदय की स्वस्थता से जुड़ी दूसरी एक्सरसाइज़ की तुलना में जोखिम को ज़्यादा कम करता है। 'ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ स्पोर्ट्स मेडिसिन' में छपी एक स्टडी में पाया गया है कि नियमित रूप से बैडमिंटन खेलने से मृत्यु का ख़तरा 47% तक कम हो सकता है – जो तैराकी, साइकिलिंग या दौड़ने से भी ज़्यादा है। बेडमिंटन मांसपेशियों को टोन करने और शरीर को सही आकार में रखने में मदद करता है, आपके मेटाबॉलिज़्म रेट को बेहतर बनाता है, दिल को बेहतर ढंग से काम करने में मदद करता है, हड्डियों की

डेंसिटी बढ़ाता है और फेफड़ों की कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है। बैडमिंटन सिर्फ़ एक खेल नहीं है बल्कि सिर्फ़ एक खेल से कहीं ज़्यादा यह सामाजिक

विकास, लैंगिक समानता और स्वस्थ जीवनशैली का ज़रिया है। 'वर्ल्ड बैडमिंटन डे' पर इन मूल्यों पर खास ज़ोर दिया जाता है। यह इवेंट लोगों को जोड़ने, जीवन को बेहतर बनाने और स्वस्थ समाज के निर्माण में बैडमिंटन की भूमिका को और मज़बूत करता है।

बेडमिंटन खेल का जन्म लगभग 170 वर्षों पूर्व हुआ था। भारत में इसका आगमन कुछ वर्षों बाद 1870 में पुणे में हुआ। इस खेल के जन्मदाता अंग्रेज थे इसलिए भारत में भी पहले अंग्रेज सैनिक इसे अपनी छावनी में खेला करते थे। भारतीय बेडमिंटन का इतिहास 1933 से प्रारंभ होता है। वर्ष 1934 में बेडमिंटन असोसियशन की स्थापना हुई और पहली राष्ट्रीय स्पर्धा खेली गई। विजय मडगावकार पहले राष्ट्रीय विजेता बने थे। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को सफलता और प्रतिष्ठा दिलाने का श्रेय नंदू नाटेकर को है। उनके कारण ही भारत 1957-58 में दलीय स्पर्धाओं में श्रेष्ठता की प्रतीक थॉमस कप स्पर्धा में तीसरे स्थान पर रहा। नाटेकर ने उस जमाने के सभी चोटी के खिलाड़ियों को हराया था। 1965 में दिनेश खन्ना ने एशियाई बेडमिंटन की खुली स्पर्धा जीती। 1971 में प्रकाश पादुकोने के रूप में एक सितारा चमका और देखते ही देखते समूचे बेडमिंटन जगत पर छ गया। अपनी कुशल तकनीक, ड्राप्स, नेटवर्क ओवरहेड स्मैश और क्रॉस कोर्ट फ्लिक के बूते पर लगातार दस बार राष्ट्रीय स्पर्धा जीतकर एक इतिहास बनाया। प्रकाश हर बेडमिंटन खिलाड़ी के रोल मॉडल हुआ करते थे। और वह उनके जैसा बनाना चाहता था। उसके बाद से तो भारत को बेडमिंटन की दुनिया में बड़ी शक्ति समझा जाने लगा और आज अनेक भारतीय खिलाड़ी विश्व स्तर पर बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं, उन्हे पदकों के साथ सम्मान और अनेक उपलबधियां भी मिलीं हैं। गत तीन दशकों से विश्व रैंकिंग के टॉप ट्वंटी में कोई न कोई भारतीय खिलाड़ी अपना स्थान बनाए हुये है।

बेडमिंटन वह खेल है जो हमें जश्न मनाने के अनगिनत पल, बेहिसाब आनंद और सच्ची खुशी देता है। सभी शटलर्स को 'वर्ल्ड बैडमिंटन डे' की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

वेब सिरीज़ समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।)

साइबर क्राइम में कॉमेडी? यह हिरानी का स्टाइल है

वेबसिरीज़ की कहानी गोवा की पृष्ठभूमि में फिल्माई गई है । जहाँ एक और प्रीतम (वीर हिरानी) पूरी तरह से तकनीक पर निर्भर है, वहीं पेड्रो (अरशद वारसी) एक अनुभवी और परम्परागत तरीके से काम करने वाला पुलिस अधिकारी हैं। इन दोनों के बीच सोच और काम करने के तरीके में बहुत बड़ा अन्तर है, लेकिन एक परिस्थिति उन्हें साथ काम करने के लिए मजबूर कर देती है। यही से कहानी आगे बढ़ती है । पुलिस ऑफिसर के रूप में अरशद को मारपीट भागदौड़, खून-खराबा जैसे क्राइम को सुलझाने में मजा आता है लेकिन मामला कुछ पलट जाता है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी , राजकुमार हिरानी एक कुशल फिल्म निर्माता, निर्देशक, एडीटर और एक दक्ष फिल्म वितरक भी है । इसी सप्ताह तीन जुलाई को हिरानी जियो हॉटस्टार पर ' प्रीतम और पेड्रो ' नाम का वेब शो लाये हैं, जिसमें उनके बेटे वीर हिरानी बतौर अभिनेता एक्टिंग डेब्यू करते नजर आएंगे । अपने पुराने सह कलाकार अरशद वारसी के साथ इस मिस्ट्री-क्राइम थ्रिलर में हिरानी ने अपना कॉमेडी वाला अन्दाज़ भी ज़ोड़ा है। उनके इस कॉमेडी वाले तड़के पर बरबस यह कहने को दिल चाहता है कि - यह हिरानी का अपना स्टाइल है , सबसे रोचक - सबसे अलग । हिरानी की इस स्ट्रीमिंग डेब्यू सिरीज में अरशद वारसी, विक्रांत मैसी, बोमन ईरानी और मोना सिंह जैसे कई उम्दा कलाकार हैं। वहीं इस सिरीज से राजकुमार हिरानी के बेटे वीर हिरानी ने भी बतौर प्रमुख भूमिका के इस ग्लैमर की दुनिया में पदार्पण भी किया है ।वीर इस भूमिका में खूब जँच रहे हैं ।

इस वेबसिरीज़ की कहानी गोवा की पृष्ठभूमि में फिल्माई गई है । जहाँ एक और प्रीतम (वीर हिरानी) पूरी तरह से तकनीक पर निर्भर है, वहीं पेड्रो (अरशद वारसी) एक अनुभवी और परम्परागत तरीके से काम करने वाला पुलिस अधिकारी हैं। इन दोनों के बीच सोच और काम करने के तरीके में बहुत बड़ा अन्तर है, लेकिन एक परिस्थिति उन्हें साथ काम करने के लिए मजबूर कर देती है। यही से कहानी आगे बढ़ती है । पुलिस ऑफिसर के रूप में अरशद को मारपीट भागदौड़, खून-खराबा जैसे क्राइम को सुलझाने में मजा आता है लेकिन मामला कुछ पलट जाता है। अब इनकी ड्यूटी साइबर क्राइम में लगती है और यहाँ इन्हें सामने कीबोर्ड देखकर भी उलझन होती है। अंतत इनकी मदद के लिए एक टेक जीनियस प्रीतम पार्कर (वीर हिरानी) सामने आता है जो वैक्यूम क्लीनर्स बेचता है। प्रीतम पेड्रो की समस्या का समाधान कर देता है जिससे वो काफी इम्प्रेस भी होता है। पेड्रो अपने ट्रांसफर को लेकर परेशान है और प्रीतम उन्हें एक आइडिया देता है। स्पोर्ट्स मिनिस्टर के बेटे को अगवा करने का आइडिया ताकि पेड्रो को अपनी मनचाही जगह पर ट्रांसफर मिल जाए। इसके बाद कहानी इसी

के इर्द-गिर्द घूमने लगती है और फिर सिरीज में एंट्री होती है विक्रांत मैसी की, जो नेगेटिव रोल में बेहद खूँखार दिख रहे हैं।

सालों पहले प्रीतम यानी वीर हिरानी ने 'मुन्नाभाई एमबीबीएस' में अरशद वारसी के बेटे शॉर्ट सर्किट का रोल निभाया था। अब बड़े होकर बतौर लीड एक बार फिर से अरशद वारसी के साथ ही नजर आ रहे हैं। बताते चलें कि वीर हिरानी ने लंदन की मशहूर रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट से गैजुएशन किया है। बचपन में अपनी ही पिता की फिल्म 'मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस.' में 'शॉर्ट-सर्किट' का रोल निभाने के बाद पिता के साथ ही ओटीटी पर भी इस बार एंट्री मिल गई है।इस सीरीज में अरशद वारसी के अलावा वीर हिरानी हैं, जो पेड्रो का रोल कर रहे हैं। विक्रांत मैसी के अलावा मोना सिंह, बोमन ईरानी भी 'प्रीतम एंड पेड्रो' में नजर आएंगे। इनके अलावा सिरीज में सत्यदीप मिश्रा और श्रुति मराठे भी अहम किरदारों में नजर आएंगे।

इस सिरीज़ के निर्देशक अविनाश अरुण के अनुसार उनकी कोशिश थी कि दर्शकों को एक ऐसा अनुभव दिया जाए जो लगातार उन्हें चौंकाता रहे। इस सिरीज में कॉमेडी के साथ-साथ इंसानी रिश्तों की गहराई भी दिखाई गई है। यह कहानी सिर्फ हँसाने या मनोरंजन करने के लिए नहीं है बल्कि यह दर्शकों को सिरीज़ के चरित्रों से भावनात्मक रूप से जोड़ने की भी रही । इतने शानदार कलाकारों के साथ काम करना मेरे लिए वाकई एक संतोषजनक अनुभव रहा।इस सिरीज में सबसे अच्छी बात यह है कि हर चरित्र की अपनी अलग परतें हैं। कहानी में सिर्फ कॉमेडी नहीं है, बल्कि मिस्ट्री और इमोशन भी गहराई से जुड़े हुए हैं। हर चरित्र अपने व्यक्तिगत संघर्ष और उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ता है, जिससे पूरी कहानी वास्तविक लगती है। इस तरह की अनोखी कहानी को देखना एक अच्छा अनुभव है ।

जल-थल और अग्नि तीनों मिल गए

चिता धधक रही थी और नदी आ गई, सबकुछ बहा ले गई, लोग बोले-असली मुक्ति

धार (नप्र)। कुदरत के रंग भी अजीब हैं। कभी वो कहर ढाती है, तो कभी ऐसे संयोग बनाती है कि इंसान बस देखता रह जाता है। मध्य प्रदेश के धार जिले के धरमपुरी तहसील के जामला गांव से एक ऐसी ही झकझोर देने वाली और अचरज से भरी तस्वीर सामने आई है। भारी मानसून बारिश के बीच यहां एक अंतिम संस्कार के दौरान प्रकृति का वो विकराल रूप देखने को मिला, जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी।

आधे से ज्यादा जल चुका था शव, तभी आ गया सैलाब

दरअसल, जामला गांव में एक ग्रामीण की मौत के बाद परिजन और ग्रामीण शव को अंतिम संस्कार के लिए गांव के बाहर स्थित मुक्तिधाम लेकर पहुंचे थे। मुक्तिधाम के टीनशेड के नीचे चिता सजाई गई और मुखाग्नि दी गई। सब कुछ सामान्य चल रहा था, लकड़ियां आग में सुर्ख लाल हो चुकी थीं और शव आधे से ज्यादा जल चुका था।तभी अचानक मुक्तिधाम के पास से गुजरने वाले बरसाती नदी का जलस्तर पलक झपकते ही बढ़ गया। पानी इतनी तेजी से ऊपर आया कि चिता के पास खड़े लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। जान बचाने के लिए लोग तुरंत टीनशेड से निकलकर ऊंचे किनारे की तरफ भागे।

देखते ही देखते बह गई जलती चिता, पीछे रह गया धुंआ

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, पानी का बहाव इतना तेज था कि उसने चंद मिनटों में पूरे अंत्येष्टि स्थल को अपनी चपेट में ले लिया। पानी की लहरें जलती हुई चिता, लकड़ियों और अधजले शव को अपने साथ बहाकर ले गईं। पीछे रह गया तो सिर्फ पानी की सतह पर तैरता हल्का सा धुआं। इस खौफनाक और भावुक कर देने वाले मंजर को देखकर मृतक के परिजन किनारे पर खड़े बेबस होकर आंसू बहाते रहे।

उनके सामने ही अंतिम संस्कार भी हो गया और अस्थियां भी विसर्जित हो गईं। वहां मौजूद कुछ युवकों ने इस घटना का वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

इस वीडियो को देखकर जहां लोग परिवार के प्रति संवेदनाएं जता रहे हैं, वहीं इस अनोखे संयोग पर हैरान भी हैं। सोशल मीडिया पर यूजर्स इस पर तरह-तरह के कमेंट्स कर रहे हैं-

जल, थल, अग्नि और वायु का मिलन हो गया लोगों का कहना है कि इस मृत आत्मा को एक साथ पंचतत्व का साथ मिला, जो किसी महापुरुष को ही नसीब होता है।

प्रकृति ने खुद किया विसर्जन एक यूजर ने लिखा, प्रकृति खुद इस पुण्य आत्मा को पंचतत्व में विलीन करने प्रत्यक्ष रूप से आई थी। साक्षात अस्थि विसर्जन हो गया।अद्भुत विदाई से लोग भावुक, कई लोग इसे बेहद भाग्यशाली और प्राकृतिक मुक्ति बता रहे हैं।

जामला गांव में बाढ़ का कहर

आपको बता दें कि धार जिले का जामला गांव इन दिनों भारी मानसूनी बारिश और बाढ़ की चपेट में है। करीब 150 से ज्यादा परिवारों की आबादी वाला यह गांव चारों तरफ से पानी से घिरा हुआ है, जिससे ग्रामीणों का जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो चुका है और लोग इस तरह की विकट परिस्थितियों में अंतिम संस्कार करने को मजबूर हैं।

गाडरवारा में चप्पलों से मकान मालिक की कर दी पिटाई

घर खाली कराने पर विवाद, दो महिलाओं ने बीच सड़क पर जमकर पीटा

गाडरवारा (नप्र)। शहर के सबसे व्यस्त शक्ति चौक पर मकान खाली कराने को लेकर ऐसा हाईवोल्टेज ड्रामा हुआ, जिसे देखने के लिए कुछ ही मिनटों में लोगों की भीड़ जुट गई। मकान मालिक और किराएदार महिलाओं के बीच शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते हाथापाई में बदल गया। गुस्साई दो महिलाओं ने बीच सड़क पर ही मकान मालिक की चप्पलों और थप्पड़ों से पिटाई कर दी। काफी देर तक सड़क पर हंगामा चलता रहा। राहगीर और आसपास के दुकानदार बीच-बचाव की कोशिश करते रहे, जबकि कई लोग मोबाइल से घटना का वीडियो बनाते रहे। घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, मकान मालिक और किराएदारों के बीच पिछले कुछ समय से मकान खाली कराने को लेकर विवाद चल रहा था। शुक्रवार को दोनों पक्षों के बीच इसी मुद्दे पर फिर बातचीत हुई, लेकिन मामला सुलझने के बजाय बिगड़ गया। पहले दोनों पक्षों के बीच तीखी कहासुनी हुई। आवाजें ऊंची होने लगीं और कुछ ही देर में विवाद सड़क पर आ गया। देखते ही देखते दोनों महिलाओं ने अपना आपा खो दिया और मकान मालिक पर चप्पलों और थप्पड़ों से हमला कर दिया।

पुलिस जांच में जुटी, दोनों पक्षों से पूछताछ जारी- बीच सड़क पर हो रही मारपीट से शक्ति चौक पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। कुछ देर के लिए यातायात भी प्रभावित हुआ। आसपास मौजूद लोगों ने महिलाओं को रोकने और दोनों पक्षों को अलग करने का प्रयास किया, लेकिन गुस्से के कारण विवाद काफी देर तक चलता रहा।

मौके पर मौजूद लोगों की भारी भीड़ तमाशबीन बनी रही, जबकि कई लोगों ने घटना का वीडियो अपने मोबाइल फोन में कैद कर लिया।

घटना की सूचना मिलते ही गाडरवारा थाना पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। पुलिस ने पहले दोनों पक्षों को अलग किया, फिर समझाइश देकर माहौल शांत कराया। इसके बाद मकान मालिक और दोनों महिलाओं को थाने ले जाया गया, जहां उनसे अलग-अलग पूछताछ की गई। पुलिस ने घटनास्थल पर मौजूद लोगों से भी जानकारी जुटाई।

गाडरवारा और लखनादौन में पूर्व सीएमओ के घर ईओडब्ल्यू की रेड

सर्च ऑपरेशन में मिली करोड़ों की जायदाद, अभी खुलेंगे बैंक लॉकर

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रही मुहिम के तहत जबलपुर आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) ने एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। ईओडब्ल्यू की टीमों ने पूर्व प्रभारी मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) योगेंद्र कुमार धीमोले के ठिकानों पर ताबड़तोड़ छापेमारी की, जिसमें शुरुआती तौर पर ही 2.36 करोड़ रुपये से अधिक की अनुपातहीन संपत्ति का खुलासा हुआ है।

आय से अधिक संपत्ति की पुख्ता शिकायत मिलने के बाद हरकत में आई ईओडब्ल्यू की अलग-अलग टीमों ने शुक्रवार को धीमोले के गाडरवारा और लखनादौन स्थित रिहायशी परिसरों पर एक साथ सर्च ऑपरेशन शुरू किया।

गाडरवारा और लखनादौन में आलीशान बंगले और लग्जरी गाड़ियां

ईओडब्ल्यू अधिकारियों के मुताबिक, गाडरवारा स्थित आवास की तलाशी के दौरान करीब 1 करोड़ रुपये कीमत का एक आलीशान मकान, 45,000 रुपये नकद और करीब 61 लाख रुपये मूल्य का घरेलू सामान बरामद किया गया है। इसके अलावा, सर्चिंग में 209 ग्राम सोने के आभूषण, 671 ग्राम चांदी, एक महिंद्रा थार और एक फोर्ड फिगो कार भी जब्त की गई है।

वहीं, लखनादौन स्थित परिसर से जांचकर्ताओं को एक अन्य मकान, एक कमर्शियल दुकान, एक प्लॉट और करीब तीन एकड़ कृषि भूमि के दस्तावेज मिले हैं। इसके साथ ही एक ट्रैक्टर-ट्रॉली और कंक्रीट मिक्सर मशीन जैसी संपत्तियों का भी पता चला है।

पत्नी के ताने को एमपी हाईकोर्ट ने माना गंभीर उकसावा

हत्यारे पति की उम्रकैद 7 साल में बदली

छिंदवाड़ा (नप्र)। क्या किसी आपसी विवाद या बहस के दौरान मारा गया ताना आपराधिक कानून के तहत 'ग्रेव एंड सडन प्रोवोकेशन' (गंभीर और अचानक उकसावा) का आधार बन सकता है? मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने एक बेहद संवेदनशील और सामाजिक बहस छेड़ने वाले मामले में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए अपनी गर्भवती पत्नी की हत्या करने वाले दोषी की उम्रकैद की सजा को घटाकर मात्र सात साल के सश्रम कारावास में तब्दील कर दिया है।

जस्टिस विवेक अग्रवाल और जस्टिस अवनेंद्र कुमार सिंह की खंडपीठ ने माना कि मृतका का यह कहना कि 'मैं तुम्हारे जैसे हजार पति रख सकती हूं', आरोपी को मानसिक रूप से उत्तेजित करने और उसका आत्मनियंत्रण खोने के लिए पर्याप्त उकसावा था।

ट्रायल कोर्ट ने दी थी उम्रकैद, हाई कोर्ट ने बदली धारा- यह पूरा मामला जुलाई 2021 का है, जब छिंदवाड़ा की कुलबहेरी नदी के किनारे शिवा नाम के शख्स ने अपनी सात महीने की गर्भवती पत्नी किरण की पत्थर मारकर हत्या कर दी थी। निचली अदालत ने इसे जघन्य अपराध मानते हुए आईपीसी की धारा 304 पार्ट फर्स्ट (या हत्या) के तहत दोषी को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। हालांकि, हाई कोर्ट ने इस फैसले को आंशिक रूप से पलटते हुए सजा को आईपीसी की धारा 304 पार्ट सेकेण्ड (गैर-इरादतन हत्या) में बदल दिया।

वारदात के तुरंत बाद खुद आरोपी ने किया था पुलिस को फोन- हाई कोर्ट ने अपने फैसले में इस बात पर विशेष जोर दिया कि यह हत्याकांड पहले से सोची-समझी साजिश नहीं था। बेंच ने कहा कि अगर आरोपी की नीयत पहले से हत्या की होती, तो वह वारदात के ठीक बाद खुद मृतका के परिजनों और पुलिस को फोन कर अपना जुर्म कबूल नहीं करता। घटनास्थल पर कोई हथियार पहले से मौजूद नहीं था, बल्कि वहां पड़ा एक पत्थर गुस्से में अचानक उठाया गया था।

पति को निकम्मा कहना आत्मनियंत्रण खोने का कारण- आईपीसी की धारा 300 के एक्सेप्शन 1 का हवाला देते हुए खंडपीठ ने सुप्रीम कोर्ट के पुराने फैसलों को नजीर बनाया। जजों ने बेहद महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा कि जब कोई पत्नी अपने पति से कहती है कि वह उसके जैसे हजार पति रख सकती है, तो यह सीधे तौर पर पति के आत्मसम्मान और उसकी उपयोगिता पर चोट है। यह दर्शाता है कि एक इंसान और पति के रूप में उसकी कोई वैल्यू नहीं है। कोर्ट ने माना कि इस बयान ने आरोपी को इस कदर उकसाया कि उसने नियंत्रण खो दिया, जिसके कारण यह दर्दनाक हादसा हुआ।

जीतू पटवारी को 5 करोड़ का मानहानि नोटिस

कहा- सार्वजनिक रूप से माफी मांगें, पटवारी ने वीर भारत न्यास में घोटाले का आरोप लगाया था

भोपाल। वीर भारत न्यास के सचिव श्रीराम तिवारी ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी को पांच करोड़ रुपए की मानहानि का नोटिस भेजा है। इसके साथ ही कहा है कि जिस तरह सार्वजनिक मंच से पीसीसी चीफ पटवारी ने श्रीराम तिवारी पर आरोप लगाए हैं, उसी तरह सार्वजनिक रूप से माफी मांगें, अन्यथा मानहानि की कार्रवाई के लिए तैयार रहें। श्रीराम तिवारी की ओर से पटवारी के न्यास की प्रासंगिकता को लेकर दिए गए बयान के बाद पांच सवाल भी किए गए हैं।

यह जानकारी वीर भारत न्यास के सचिव श्रीराम तिवारी की ओर से उनके वकील हरीश मेहता और सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता गुंजन चौकसे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दी। मेहता ने कहा कि दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में जीतू पटवारी ने वीर भारत न्यास में 500 करोड़ रुपए का घोटाला होने और एक रुपए में जमीन सौंपने का आरोप लगाया था। साथ ही न्यास के सचिव श्रीराम तिवारी पर भी कई आरोप लगाए थे। मेहता ने कहा कि तथ्यों की जानकारी होने के बावजूद पटवारी ने श्रीराम तिवारी पर आरोप लगाए हैं। नोटिस में कहा गया है कि तीन दिन के भीतर सार्वजनिक रूप से दिए गए गलत बयानों पर स्पष्टीकरण दें और माफी मांगें। यदि माफी मांग लेते हैं तो कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। पटवारी सार्वजनिक रूप से मीडिया के माध्यम से खेद व्यक्त करते हुए विज्ञप्ति जारी करें। मेहता ने कहा कि इन आरोपों से उनके पक्षकार तिवारी की सार्वजनिक छवि को भी ठेस पहुंची है। अधिवक्ता मेहता ने कहा कि वीर भारत न्यास सभी वर्गों और सभी धर्मों को साथ लेकर काम करने वाला न्यास है। सचिव तिवारी ने जो भी कार्य किए हैं, वे विधि के अनुसार किए हैं। इसलिए उनकी छवि धूमिल करने का प्रयास पीसीसी चीफ पटवारी ने किया है। अधिवक्ता गुंजन चौकसे ने कहा कि वीर भारत न्यास विधिवत पंजीकृत न्यास है। यह कोई निजी न्यास नहीं है। इसके अध्यक्ष मुख्यमंत्री होते हैं और वर्ष 2012 में गठित इस न्यास के अध्यक्ष कांग्रेस शासनकाल में कांग्रेस के मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं। चौकसे ने कहा कि पांच करोड़ रुपए की मानहानि के नोटिस से प्राप्त राशि, यदि मिलती है, तो उनके पक्षकार द्वारा सार्वजनिक रूप से किसी एनजीओ को दान की जाएगी।

दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस में जीतू पटवारी ने यह आरोप लगाए थे

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस में पांच दिन पहले उज्जैन में लगभग 500 करोड़ की सरकारी जमीन और इमारत वीर भारत न्यास को मात्र 1रुपए की लीज पर सौंपने का गंभीर आरोप लगाया था। उन्होंने दावा किया था कि यह ट्रस्ट मुख्यमंत्री के करीबी का है और नियमों को ताक पर रखकर इसे एक निजी संस्था की तरह फायदा पहुंचाया गया है।

देवास की गफूर बस्ती में मिला जैश-ए-मोहम्मद का संदिग्ध आतंकी

देवास (नप्र)। मध्य प्रदेश के मालवा अंचल में आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के स्लीपर सेल और संदिग्ध नेटवर्क को लेकर एक बड़ा खुलासा हुआ है। गुजरात आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने देवास में स्थानीय पुलिस की मदद से छापेमारी कर प्रतिबंधित संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक संदिग्ध मॉड्यूल के सक्रिय सदस्य को दबोच लिया है।

गिरफ्तार किए गए 18 वर्षीय आरोपी की पहचान बिलाल दुरानी, पिता मोहम्मद अम्मार घाघा उर्फ अबू दुजाना के रूप में हुई है, जो सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी हैंडलर्स के सीधे संपर्क में था और भारत में आतंकी नेटवर्क खड़ा करने की साजिश में लिप्त था।

गफूर बस्ती में आधी रात को एटीएस का छापा- गुजरात एटीएस की टीम गुरुवार रात अचानक देवास के नाहर दरवाजा थाना क्षेत्र के अंतर्गत वारसी नगर स्थित गफूर बस्ती पहुंची। स्थानीय पुलिस को साथ लेकर टीम ने बिलाल के घर की घेराबंदी की और परिजनों से कड़ी पूछताछ के बाद उसे अपनी अभिरक्षा में ले लिया।

देवास के पुलिस अधीक्षक ने इस हाई-प्रोफाइल गिरफ्तारी की पुष्टि करते हुए बताया कि गुजरात एटीएस एक संदिग्ध की तलाश में आई थी, जिसे नियमानुसार कानूनी कागजी कार्रवाई पूरी कर एटीएस के हवाले कर दिया गया है।

मैहर में बैल की जान बचाने कुएं में उतरे चार ग्रामीण

दम घुटने से तीन की मौत, एक का इलाज जारी

मैहर (नप्र)। जिले के अमरपाटन थाना क्षेत्र के ग्राम खरमसेड़ा में एक बैल की जान बचाने की कोशिश तीन परिवारों के लिए काल बन गई। गहरे कुएं में गिरे बैल को रस्सी के सहारे बाहर निकालने की कोशिश में चार ग्रामीण एक-एक कर जहरीली गैस की चपेट में आ गए। दम घुटने के कारण तीन युवकों की तड़प-तड़प कर मौत हो गई, जबकि एक ग्रामीण अस्पताल के आईसीयू में जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहा है। इस रूह कपा देने वाले हादसे के बाद पूरे गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है।

घटना शुक्रवार की रात करीब 8-30 बजे की है। गांव के ही रामनिवास कुशवाहा के घर के पास बने 35 फीट गहरे कुएं में अचानक एक बैल गिर गया था। कुएं के भीतर से बैल के छटपटाने की आवाज सुनकर बंसल टोला और अहिरान टोला के ग्रामीण वहां एकत्र हो गए। बेजुबान को तड़पता देख गांव के दो जांबाज युवक रस्सी बांधकर कुएं के भीतर उतर गए।

तीनों को किया मृत घोषित- अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टरों ने तीन युवकों को मृत घोषित कर दिया। मृतकों की पहचान कृष्ण कुमार यादव (28 वर्ष) पिता रामदास, वीरेंद्र यादव (47 वर्ष) पिता जगदीश और राहुल यादव (34 वर्ष) पिता मोतीलाल के रूप में हुई है। वहीं चौथे ग्रामीण रामचंद्र यादव की हालत बेहद नाजुक बनी हुई है।उसको जिला अस्पताल सतना रेफर कर दिया गया है।

जांच में जुटी पुलिस- अमरपाटन एसडीओपी ख्याति मिश्रा ने बताया कि रामनिवास कुशवाहा के कुएं में गिरे बैल को निकालने के चक्कर में यह हादसा हुआ है। कुएं में जहरीली गैस और दम घुटने के कारण तीन लोगों की असामयिक मृत्यु हुई है और एक का इलाज जारी है। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है, शवों की पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों और जहरीली गैस के प्रकार का स्पष्ट रूप से पता चल सकेगा।

काफी समय से बंद था कुआं

कुआं काफी समय से बंद था और उसमें घुटनों तक पानी भरा था, जिससे उसकी तली में ऑक्सीजन का स्तर शून्य था और जानलेवा कार्बन मोनोऑक्साइड गैस जमा थी। नीचे पहुँचते ही दोनों युवकों का दम घुटने लगा और वे बेहोश हो गए। अपने साथियों को मुसीबत में देख, बाहर खड़े दो अन्य ग्रामीण भी बिना अपनी जान की परवाह किए उन्हें बचाने के लिए कुएं में कूद गए, लेकिन वे भी उस जहरीली हवा का शिकार होकर वहीं अचेत हो गए।

कांटों और हुक के सहारे निकाला बाहर

जब काफी देर तक कुएं के अंदर से कोई आवाज नहीं आई, तो मुहाने पर खड़े ग्रामीणों की रूह कांप गई। आनन-फानन में गांव वालों ने खुद ही रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। रस्सियों में लोहे के कांटे और हुक फंसाकर चारों अचेत लोगों को भारी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया। सूचना मिलने पर रात करीब 9.00 बजे डायल-112 पुलिस टीम भी मौके पर पहुंच गई, जिसके बाद सभी को तुरंत अमरपाटन सिविल अस्पताल ले जाया गया।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से साइबर जागरूकता का मंचन देखकर नागरिकों ने पुलिस की सराहना की

सोहागपुर । सम्पूर्ण भारत में निरंतर साइबर ठगी के कारण प्रदेश पुलिस ने साइबर अभियान का आगाज किया है। इसी तारतम्य में विगत दिनों पुलिस अधीक्षक श्री साईं कृष्ण एस थोटा ने प्रदेशव्यापी साइबर जन-जागरूकता अभियान 'सेफ क्लिक 2.0' के तहत साइबर जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। शुक्रवार को सोहागपुर के मुख्य बाजार आदि में नुक्कड़ नाटक का उत्कृष्ट मंचन किया गया। जिसमें नुक्कड़ नाटक मंचन कर रहे युवकों ने कहा कि अनजान वाट्स एप की फाइलें न खोले, उन्होंने बड़े शानदार विश्लेषण करते हुए कहा मैंने एक फाइल खोली तो मेरी बहिन की शादी के लिए रखें सारे पैसे निकाल लिए गए। जिसमें हमें आत्महत्या कराने को बाध्य होना पड़ा।

वहीं नुक्कड़ नाटक मंचन कर रहे युवकों ने नए तरीकों से बचाव बताएं जिसमें वर्तमान में साइबर अपराधी आम लोगों को ठगने के लिए लगातार नए-नए पैंतरे अपना रहे हैं। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को इन बदलते डिजिटल खतरों से सावधान करना है। 'रुकें, सोचें और एक्शन लें'- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस संदेश को दोहराते हुए नागरिकों से अपील की गई कि किसी भी अनजान या संदिग्ध लिंक पर तुरंत क्लिक न करें।गोपनीयता बनाए रखना आवश्यक है कोई भी व्यक्ति को अपनी बैंकिंग जानकारी, पासवर्ड या ओटीपी किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ साझा न करे। यदि किसी नागरिक के साथ ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी या साइबर ठगी होती है, तो उन्हें तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करके अपनी शिकायत दर्ज कराएं नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी ने बताया कि साइबर जागरूकता अभियान के लिए लगातार क्षेत्र में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम के अगले चरण में पुलिस की टीमें शालाओं महाविद्यालय आदि में साइबर जागरूकता से समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया जाएगा। ताकि नागरिक साइबर ठगों के झांसे में अपनी जमा पूंजी न गंवाएं। आपने नागरिकों से आव्हान किया कि कोई भी अनजान वाट्स एप फाइल खोलने से बचें। सोहागपुर में नुक्कड़ नाटक मंचन की नागरिकों ने सराहना की है।

खूंखार

बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप 'यूट्यूब' पर सुपरहिट

तेलुगू फिल्म 'जया जानकी नायका' के हिंदी डब वर्जन 'खूंखार' ने रिकॉर्ड बना दिया। 'खूंखार' यूट्यूब पर 1 बिलियन व्यूज पाने वाली दुनिया की पहली फिल्म बन गई। फिल्म की कहानी गगन और स्वीटी के प्रेम संबंध पर आधारित है। दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं, लेकिन लड़की के पिता इस रिश्ते का विरोध करते हैं। बाद में गगन एक परिवार को गुंडों से बचाने के दौरान अनजाने में स्वीटी की जान बचाता है और उसकी रक्षा का वादा करता है।

बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर सकी एक तेलुगू फिल्म ने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ऐसा इतिहास रच दिया है, जो अब तक कोई दूसरी फिल्म नहीं बना सकी। वर्ष 2017 में रिलीज हुई तेलुगू फिल्म 'जया जानकी नायका' के हिंदी डब वर्जन 'खूंखार' ने यूट्यूब पर 1 बिलियन से अधिक व्यूज़ हासिल कर दुनिया की पहली फिल्म बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। फिल्म का हिंदी डब वर्जन पेन मूवीज ने फरवरी 2019 में अपने यूट्यूब चैनल पर अपलोड किया था। करीब 7 साल बाद इस फिल्म ने 1 बिलियन व्यूज का आंकड़ा पार कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। फिल्म में बेल्लमकोंडा साई श्रीनिवास और रकुल प्रीत सिंह मुख्य भूमिकाओं में हैं, जबकि इसका निर्देशन बोयापति श्रीनू ने किया है।

इस उपलब्धि पर बोयापति श्रीनू ने सोशल मीडिया पर खुशी जाहिर करते हुए लिखा कि 1 बिलियन व्यूज, 1000 मिलियन दिल, 100 करोड़ भावनाएं और एक फिल्म। यह उपलब्धि हासिल करने वाली दुनिया की पहली फिल्म 'जया जानकी नायका' (खूंखार) को इतना प्यार देने के लिए आप सभी का धन्यवाद। यह सफलता पूरी तरह दर्शकों की है।' निर्देशक की पोस्ट पर बड़ी संख्या में प्रशंसकों ने फिल्म के लोकप्रिय संवाद लिखकर अपनी खुशी व्यक्त की। सोशल मीडिया पर भी इस उपलब्धि की व्यापक चर्चा हो रही है।

बताया जा रहा है कि यह रिकॉर्ड पहले अल्लू अर्जुन की फिल्म 'सराइनोडु' के नाम हो सकता था, लेकिन उसके हिंदी डब वर्जन का लाखों व्यूज वाला वीडियो हटाकर दोबारा अपलोड कर दिया गया, जिससे उसके व्यूज दोबारा शून्य से गिने गए। 'जया जानकी नायका' एक रोमांटिक एक्शन ड्रामा फिल्म है, जिसका निर्माण द्वारका क्रिएशन के बैनर तले मिरियाला रविंदर रेड्डी ने किया था। फिल्म की कहानी गगन और स्वीटी के प्रेम संबंध पर आधारित है। दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं, लेकिन लड़की के पिता इस रिश्ते का विरोध करते हैं। बाद में गगन एक परिवार को गुंडों से बचाने के दौरान अनजाने में स्वीटी की जान बचाता है और उसकी रक्षा का वादा करता है। फिल्म में बेल्लमकोंडा साई श्रीनिवास और रकुल प्रीत सिंह के अलावा जगपति बाबू, तरुण अरोड़ा, प्रज्ञा जायसवाल, सरथ कुमार, नंदू, सुमन, जयप्रकाश और वाणी विश्वनाथ ने भी अहम भूमिकाएं निभाई हैं।

दिलचस्प बात यह है कि सिनेमाघरों में रिलीज के समय इस फिल्म को आलोचकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली थी। लगभग 40 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने दुनिया भर में करीब 20 करोड़ का कारोबार किया था। इसके चलते डिस्ट्रीब्यूटर्स को 8 करोड़ से अधिक का नुकसान उठाना पड़ा था और फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप साबित हुई। हालांकि, अन्य कई दक्षिण भारतीय फिल्मों की तरह इस फिल्म को भी हिंदी डब वर्जन के जरिए यूट्यूब पर नया दर्शक वर्ग मिला।

अल्लू अर्जुन, राम पोथिनेनी और बेल्लमकोंडा साई श्रीनिवास जैसे कलाकारों की कई डब फिल्में डिजिटल प्लेटफॉर्म पर करोड़ों दर्शकों तक पहुंच चुकी हैं। निर्देशक बोयापति श्रीनू की पिछली फिल्म बालकृष्ण के साथ 'अखंडा 2: थांडवम' रही। जबकि, रकुल प्रीत सिंह इस वर्ष आयुष्मान खुराना, वामिका गब्बी और सारा अली खान के साथ 'पति पत्नी और वो 2' में नजर आई हैं। वहीं बेल्लमकोंडा साई श्रीनिवास हाल ही में अनुपमा परमेश्वरन के साथ फिल्म 'किष्किंधा पुरी' में दिखाई दिए।

'कॉकटेल-2' और 'वेलकम-टू द जंगल' की कमाई

बॉक्स ऑफिस पर इन दिनों दो बड़ी फिल्मों के बीच दिलचस्प मुकाबला देखने को मिल रहा है। एक ओर शाहिद कपूर और कृति सेनन की रोमांटिक ड्रामा फिल्म 'कॉकटेल 2' रिलीज के दो सप्ताह पूरे करने के करीब पहुंच गई है, वहीं दूसरी ओर अक्षय कुमार की मल्टीस्टारर कॉमेडी-एक्शन फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' लगातार दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींच रही है। मंगलवार के ताजा आंकड़ों में दोनों फिल्मों की कमाई में बढ़त दर्ज की गई है।

होमी अडजानिया के निर्देशन में बनी 'कॉकटेल 2' को समीक्षकों और दर्शकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली थी, लेकिन इसके बावजूद फिल्म बॉक्स ऑफिस पर टिके रहने में सफल रही है। यह फिल्म साल 2012 में आई सैफ अली खान, दीपिका पादुकोण और डायना पेंटी अभिनीत सुपरहिट फिल्म 'कॉकटेल' की सीक्वल है। फिल्म ने रिलीज के 12वें दिन यानी मंगलवार को भारत में 1.85 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया। यह इसके 11वें दिन की कमाई से लगभग 5.7 प्रतिशत अधिक है, जिससे साफ है कि फिल्म को अब भी दर्शकों का समर्थन मिल रहा है।

अहमद खान के निर्देशन में बनी 'वेलकम टू द जंगल' लोकप्रिय 'वेलकम' फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म है। अक्षय कुमार के साथ कई बड़े सितारों से सजी यह कॉमेडी-एक्शन फिल्म 26 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म ने शुरुआती दिनों से ही मजबूत प्रदर्शन किया है। सोमवार को हल्की गिरावट के बाद मंगलवार को इसने फिर रफ्तार पकड़ ली। रिलीज के 5वें दिन फिल्म ने 9.25 करोड़ रुपये का शानदार कलेक्शन किया, जो सोमवार की 8.50 करोड़ रुपये की कमाई से बेहतर रहा। एक तरफ रोमांस और रिश्तों की कहानी कहती 'कॉकटेल 2' दर्शकों को आकर्षित कर रही है, तो दूसरी तरफ कॉमेडी और एक्शन से भरपूर 'वेलकम टू द जंगल' बॉक्स ऑफिस पर मजबूत पकड़ बनाए हुए है। आने वाले दिनों में दोनों फिल्मों की कमाई पर ट्रेड की नजर बनी रहेगी।

रियल बॉक्स

परदे पर पिता की छाया, सुरों में ढला वात्सल्य

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि उसने समय-समय पर समाज के बदलते रिश्तों, पारिवारिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी स्वर दिया है। हिंदी फिल्मों में मां की ममता पर असंख्य कालजयी गीत लिखे गए, प्रेम और भाई-बहन के रिश्तों पर भी खूब रचनाएं हुईं, लेकिन पिता का रिश्ता हमेशा कुछ अलग रहा। कम बोलने वाला, अनुशासनप्रिय, जिम्मेदार और भीतर से अथाह स्नेह से भरा हुआ पिता फिल्मों में भी अक्सर इसी रूप में दिखाई देता है। शायद यही कारण है कि पिता पर लिखे गए गीत संख्या में भले कम हों, लेकिन भावनात्मक गहराई में वे किसी से कम नहीं हैं। भारतीय परिवारों में पिता केवल घर के मुखिया नहीं, बल्कि सुरक्षा, संस्कार, त्याग और भरोसे का दूसरा नाम रहे हैं। वे अपनी भावनाओं को शब्दों में कम और जिम्मेदारियों में अधिक व्यक्त करते हैं। गीतकारों और संगीतकारों ने इस मौन प्रेम को समय-समय पर सुरों में ढालकर ऐसे गीत रचे, जो पीढ़ियों की स्मृतियों का हिस्सा बन गए।

श्वेत-श्याम सिनेमा के दौर में पिता को परिवार के नैतिक आधार और अनुशासन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। उस समय पिता को सीधे संबोधित करने वाले गीत कम थे, लेकिन उनके दिए संस्कार अनेक गीतों में सहज रूप से दिखाई देते हैं। वर्ष 1959 में प्रदर्शित फिल्म 'अनाड़ी' का गीत 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार' इसका सुंदर उदाहरण है। शैलेंद्र के शब्दों और शंकर-जयकिशन के संगीत से सजा यह गीत जीवन को दूसरों के लिए जीने की सीख देता है। यह किसी आदर्श पिता की उसी शिक्षा का विस्तार प्रतीत होता है, जो अपने बच्चों को अच्छे इंसान बनने का पाठ पढ़ाता है। इसी दौर में फिल्म 'मासूम' का लोकप्रिय गीत 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए' भी याद आता है। बाल सुलभ चंचलता से भरे इस गीत में परिवार की सहज आत्मीयता झलकती है। हेमंत कुमार की धुन और राजा मेहंदी अली खान के शब्द आज भी बचपन की स्मृतियों को ताजा कर देते हैं।

भारतीय समाज में पिता का सबसे भावुक क्षण तब आता है, जब वह अपनी बेटी को विदा करता है। इस भाव को जितनी मार्मिकता से वर्ष 1968 की फिल्म 'नीलकमल' के गीत 'बाबुल की दुआएँ लेती जा' ने व्यक्त किया, वैसी मिसाल विरले ही मिलती है। साहिर लुधियानवी के शब्द, रवि का संगीत और मोहम्मद रफ़ी की दर्द भरी आवाज़ इस गीत को अमर बना देते हैं। बलराज साहनी पर फिल्माया गया यह दृश्य आज भी विवाह समारोहों की विदाई का पर्याय है। वर्षों बाद भी जब यह गीत सुनाई देता है, तो पिता और बेटी दोनों की आंखें सहज ही नम हो जाती हैं। सत्तर और अस्सी के दशक में समाज बदलने लगा तो फिल्मों में पिता की छवि भी बदली। अब वे केवल अनुशासन के प्रतीक नहीं रहे, बल्कि बच्चों के जीवन में सक्रिय भागीदार के रूप में दिखाई देने लगे। वर्ष 1977 की फिल्म 'हम किसी से कम नहीं' का गीत 'बचके रहना रे बाबा' इसी बदलाव का संकेत देता है। राहुल देव बर्मन के संगीत और मजरूह सुल्तानपुरी के शब्दों से सजा यह गीत मनोरंजन के साथ जीवन की व्यावहारिक सीख भी देता है। दूसरी ओर, 'त्रिशूल' जैसी फिल्मों ने पिता-पुत्र के वैचारिक संघर्ष को कथा का केंद्र बनाया और रिश्तों की जटिलताओं को नई दृष्टि दी।

यदि पिता पर आधारित हिंदी सिनेमा के सबसे लोकप्रिय गीत की बात हो तो वर्ष 1988 की फिल्म 'कयामत से कयामत तक' का 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा' सबसे पहले स्मरण होता है। यह केवल एक गीत नहीं, बल्कि हर भारतीय परिवार की आकांक्षाओं का संगीत है। मजरूह सुल्तानपुरी के शब्द, आनंद-मिलिंद का मधुर संगीत और उदित नारायण की आवाज ने इसे कालजयी बना दिया। आमिर खान पर फिल्माया गया यह गीत उस युवा मन की बेचैनी को भी व्यक्त करता है, जो पिता के सपनों को पूरा करने के साथ अपनी अलग पहचान बनाना चाहता है। यही कारण है कि यह गीत आज भी कॉलेजों के विदाई समारोहों से लेकर पारिवारिक आयोजनों तक समान रूप से लोकप्रिय है। नब्बे के दशक के बाद फिल्मों में पिता का चरित्र और अधिक मानवीय तथा संवेदनशील होता गया। वर्ष 2000 की फिल्म 'पापा द ग्रेट' का गीत 'ओ मेरे पापा द ग्रेट' पिता के प्रति सम्मान और गर्व का सहज उत्सव है। वहीं 'कभी खुशी कभी ग़म' ने पिता-पुत्र के बीच संवादहीनता, अहं और प्रेम के द्वंद्व को गहराई से उकेरा। इसी समय सुभाष घई की फिल्म 'यादें' ने यह दिखाया कि मां की अनुपस्थिति में एक पिता किस तरह अपने बच्चों के लिए दोनों भूमिकाएं निभाता है।

पिता और बेटी के रिश्ते को नए दौर में सबसे लोकप्रिय अभिव्यक्ति वर्ष 2003 की फिल्म 'मैं प्रेम की दीवानी हूँ' के गीत 'पापा की परी हूँ मैं' से मिली। यह गीत आधुनिक परिवारों में बेटियों और पिता के बीच बढ़ती आत्मीयता का प्रतीक बन गया। इसके बाद वर्ष 2005 की फिल्म 'मैं ऐसा ही हूँ' का 'पापा मेरे पापा, मेरे प्यारे पापा' रिश्तों की संवेदनशीलता को नई ऊंचाई देता है। अजय देवगन पर फिल्माया गया यह गीत बताता है कि परिस्थितियां कैसी भी हों, पिता का स्नेह कभी कम नहीं होता। आधुनिक हिंदी सिनेमा ने पिता के मौन संघर्ष को भी आवाज़ दी। वर्ष 2013 की फिल्म 'बॉस' का गीत 'पिता से है नाम तेरा, पिता पहचान तेरी' आज के समय में पिता को समर्पित सबसे प्रभावशाली गीतों में गिना जाता है। यह बताता है कि व्यक्ति की पहचान, उसके संस्कार और उसके व्यक्तित्व की जड़ें पिता से ही जुड़ी होती हैं।

वर्ष 2016 में आई 'दंगल' ने पिता की सख्ती को नए अर्थ दिए। 'हानिकारक बापू' पहली नजर में हास्य पैदा करता है, लेकिन अंततः यही गीत बताता है कि अनुशासन और कठोरता भी प्रेम की ही एक अभिव्यक्ति हो सकती है। महावीर सिंह फोगाट के संघर्ष के माध्यम से यह गीत हर उस पिता को सम्मान देता है, जो अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए कठोर निर्णय लेने से नहीं हिचकता। इसी क्रम में 'राजी' का 'दिलबरो' पिता-पुत्री के रिश्ते का अत्यंत संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करता है। गुलज़ार के शब्दों में बेटी की विदाई केवल एक पारिवारिक घटना नहीं, बल्कि भावनाओं का अथाह सागर बन जाती है। वहीं 'गुंजन सक्सेना : द कारगिल गर्ल' यह संदेश देती है कि किसी बेटी की ऊंची उड़ान के पीछे उसके पिता का विश्वास सबसे बड़ी ताकत बन सकता है।

समकालीन सिनेमा में पिता-पुत्र संबंधों का सबसे जटिल चित्र वर्ष 2023 की फिल्म 'एनिमल' में दिखाई देता है। 'पापा मेरी जान' आधुनिक पीढ़ी की उस भावनात्मक प्यास को व्यक्त करता है, जिसमें सफलता, शक्ति और उपलब्धियों के बावजूद एक बेटा अपने पिता के स्नेह और स्वीकृति की तलाश करता रहता है। सोनू निगम की आवाज ने इस गीत को असाधारण भावनात्मक ऊंचाई प्रदान की है। हिंदी सिनेमा में पिता पर आधारित गीतों का यह सफर भारतीय समाज में पिता की बदलती भूमिका का सांस्कृतिक इतिहास भी है। कभी वे अनुशासन और अधिकार के प्रतीक थे, फिर मार्गदर्शक बने, उसके बाद मित्र की तरह बच्चों के सपनों में शामिल हुए और आज भावनात्मक सहारे के रूप में भी स्वीकार किए जा रहे हैं। बदलते समय के साथ गीतों की धुनें बदलीं, शब्द बदले और प्रस्तुति भी बदली, लेकिन पिता के प्रति सम्मान, विश्वास और प्रेम की भावना कभी नहीं बदली।

यही कारण है कि 'बाबुल की दुआएँ लेती जा' से लेकर 'पापा मेरी जान' तक की यह संगीतमय यात्रा केवल फिल्मों का इतिहास नहीं, बल्कि भारतीय परिवारों की भावनात्मक विरासत भी है। ये गीत हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि पिता अक्सर कम बोलते हैं, लेकिन उनका मौन ही जीवन का सबसे बड़ा आश्वासन होता है। शायद इसलिए हिंदी सिनेमा में पिता पर लिखे गए गीत केवल सुरीली रचनाएं नहीं, बल्कि उन अनकहे रिश्तों की अमर अभिव्यक्ति हैं, जो समय के साथ और भी अधिक मूल्यवान होते जाते हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मों में भी कांपी है धरती, आए हैं जलजले

अशोक जोशी

वेनेजुएला में हाल ही में आए भयावह भूकंप ने वहां के जीवन को तहस नहस कर डाला। इसी दौरान जापान में भी भूकंप के झटके देखे गए। प्राकृतिक आपदा का और हमारे जीवन का चोली दामन का साथ

है। तेज हवाओं और बारिश का असर कई जिंदगियों पर भी पड़ा है। इस तरह के तूफान की सबसे बड़ी वजह ग्लोबल वार्मिंग है, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। पर्यावरण हो रहे बदलाव के चलते हमें कई बार सूखा और कई बाढ़ का सामना भी करना पड़ता है।

बॉलीवुड और हॉलीवुड की कई फिल्मों के कथानक में भूकंप, तूफान और बाढ़ के बारे में कहानियां रची गई है। कई फिल्मों के टाइटल में भी आंधी और तूफान को शामिल किया गया है। हिंदी फिल्मों में आंधी तूफान और बारिश को कभी सस्पेंस तो कभी परिवार में आयी आफत के रूप में दिखाया जाता रहा है। राज कपूर की पहली सफल फिल्म का टाइटल की 'बरसात' था। उनकी फिल्म 'आवारा' में जब पृथ्वीराज कपूर अपनी गर्भवती पत्नी को घर से बाहर निकाल देते हैं तो अचानक आंधी तूफान के साथ बारिश आ जाती है। 'मेरा नाम जोकर' में जब राज कपूर फिल्म के तीसरे हिस्से में पद्मिनी का घर छोड़कर चला जाता है तब कड़क के साथ बिजली गरजती है और भारी बरसात में पद्मिनी उसे लौटकर आने की गुजारिश करते हुए कहती है अंग लग जा बालमा। राज कपूर की ही फिल्म 'सत्यं शिवं सुंदरम' के अंत में बाढ़ का प्रलयंकारी दृश्य दिखाया गया था। पुल टूटने की वजह से पूरा गांव बर्बाद हो जाता है। लोग अपना गांव छोड़कर दूर दूर चले जाते है। शशि कपूर और जीनत अमान की इस फिल्म के बाढ वाले दृश्य को राजकपूर ने खुद कैमरा लेकर अपने लोनी वाले फार्म हाऊस में आयी वास्तविक बाढ के समय फिल्माया था।

राज कपूर की तरह ही महबूब खान ने भी बाढ का प्रभावशाली उपयोग अपनी क्लासिक फिल्म मदर इंडिया में किया था। नरगिस और सुनील दत्त की इस फिल्म में बाढ़ से पूरे गांव में तबाही मच जाती है। भुखमरी और प्लेग की बीमारी से गांव वाले परेशान हैं, इस बीच कैसे ग्रामीण अपने परिवार को बचाते हैं। 'मदर इंडिया' भारत की उन फिल्मों में से एक है जो ऑस्कर के नॉमिनेशन तक पहुंचने में कामयाब रही। इसके अलावा 'सोहनी महिवाल' और 'बैजू बावरा' में भी बाढ़ को फिल्म के कथानक से जोडा गया था। बारिश और बाढ़ को मनोज कुमार ने अपनी फिल्म 'पूरब और पश्चिम' के पहले श्वेत श्याम हिस्से में बहुत कलात्मकता से फिल्माया था। मनमोहन देसाई की फिल्म 'सच्चा झूठा' में राजेश खन्ना की बहन नाज भी बाढ़ में फंस जाती है।

ऐसा नहीं कि हिन्दी फिल्मां में प्राकृतिक आपदा के नाम पर केवल बाढ़ का ही सहारा लिया गया है। जब बाढ़ पर बस नहीं चल पाया तो फिल्मकारों ने भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा को फिल्म की कथानक में जोड़कर प्रस्तुत किया है। इसमें सबसे ज्यादा सफल रही है बीआर चोपड़ा की फिल्म 'वक्त।' फिल्म में भूकंप की वजह से लाला केदारनाथ का घर तबाह हो जाता है जिससे उसका परिवार बिखर जाता है। फिल्म में दिखाया जाता है कि किस तरह एक प्राकृतिक आपदा पूरी जिंदगी को बर्बाद कर देती है।

फिल्म जल में कच्छ के रण को दिखाया गया है। इसकी कहानी बक्का के इर्द गिर्द घूमती है जो सूखे के बीच पानी ढूंढ़ने की कोशिश करता है। डायरेक्टर अमोल गुप्ते की इस फिल्म में पूरब कोहली ने मुख्य भूमिका निभाई थी। साल 2005 में महाराष्ट्र में आई बाढ़ पर आधारित इस फिल्म में इमरान हाशमी और सोहा अली खान मुख्य भूमिका में थे। दोनों बाढ़ के बीच फंसकर कैसे मुसीबत से निकलते हैं फिल्म में यह दिखाया गया है। सारा अली खान और सुशांत सिंह राजपूत की ये फिल्म केदारनाथ त्रासदी पर बनी है। साल 2013 में हिमालय के इतिहास की सबसे भयानक तबाही हुई थी। फिल्म हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के बीच लव स्टोरी पर आधारित है।

एक ओर जहां बॉलीवुड की फिल्मों में प्राकृतिक आपदा को फिल्म के कथानक के साथ जोडकर इस पर कुछ ही रीलें खर्च करने का प्रयास किया गया है वहीं हॉलीवुड ने इस विषय पर पूरी की पूरी फिल्में समर्पित कर दी है। उनके इस प्रयास को दर्शकों ने बकायदा पसंद भी किया है। हॉलीवुड में प्राकृतिक आपदाओं पर बनी फिल्मों की खासियत ये होती है कि ये अपने दर्शकों को असली थ्रिलर महसूस करवाती हैं और इतना रोमांच पैदा करती हैं कि दर्शक अपनी सीट पर से ही वो आपदा महसूस कर लेता है। ये बिल्कुल असली जैसा लगता है। अब तक प्राकृतिक आपदाओं से लेकर दुनिया के खत्म होने तक, कई प्राकृतिक आपदाओं पर फिल्में बन चुकी हैं। हेलेन हंट और बिल पैक्सटन द्वारा अभिनीत 1996 में आई फिल्म ट्विस्टर बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार हिट साबित हुई। यह फिल्म वास्तव में जबरदस्त दृश्य प्रभावों को दिखाती है। 2004 में आयी 'द डे आफ्टर टुमारो' इस फिल्म में बर्फीले तूफान और सुनामी की त्रासदी को दिखाया है।

अमेरिका में आई इस त्रासदी से पूरा देश तहस नहस हो जाता है। इस फिल्म का निर्देशन रोलैंड ने किया था। इसके बाद 2007 में प्रदर्शित टोनी के निर्देशन में बनी फिल्म 'फ्लड' पूरी तरह से बाढ़ पर ही आधारित थी। 2009 में प्रदर्शित फिल्म 2012 में भूकंप और सुनामी से पूरी दुनिया आई तबाही का रोमांचक फिल्मांकन किया गया है। इस फिल्म जॉन कुसैक, अमांडा पीट और ओलिवर जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म का निर्देशन भी रोलैंड ने ही किया था। दुनियाभर के दर्शकों ने फिल्म को काफी पसंद किया था। 2011 में आई स्टीवन सोडरबर्ग की फिल्म कंटेजियन कोरोना वायरस के बढ़ने के बाद सोशल मीडिया पर ट्रेंड हो रही है। इस फिल्म में ग्वेनिथ पल्ट्रो, मारिओन कोटिलार्ड, ब्रेयान क्रेन्सटन, मैट डेमन, लॉरेन्स फिशबर्न, जूड लॉ, केट विंसलेट और जेनिफर ने एक्टिंग की है। यह फिल्म 2009 में फैले स्वाइन फ्लू के वायरस के फैलने पर आधारित थी।

2015 में प्रदर्शित फिल्म 'सैन एंड्रियास' में ड्वेन जॉनसन, कार्ला गुजिनो और अलेक्जेन्ड्रा जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म का निर्देशन ब्रैड पेयटन ने किया था। सैन एंड्रियास में भूकंप और सुनामी से होने वाली त्रासदी को दिखाया गया है। हॉलीवुड की ही फिल्म जियोस्टॉर्म एक साइंस डिजास्टर आधारित फिल्म थी। ये फिल्म साल 2017 में आई थी। इस फिल्म का निर्देशन डीन डिवालिन ने किया था। इस फिल्म में जेरार्ड बटलर, जिम स्टर्जेस और अब्बी कॉर्निश जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। हॉलीवुड ने जहां इस विषय को षिद्यत के साथ उठाया है वहीं हमारे निर्माता निर्देशक इसे फिलर के रूप में ही उपयोग करते रहें। इससे ज्यादा हुआ तो बारिश, तूफान, आंधी, जलजला, आंधी और तूफान और 'आया तूफान' जैसे शीर्षक या जिंदगी में आया तूफान, हुस्न चला है इश्क़ से मिलने जुल्म की बदली छायी है' जैसे गीत बनाकर ही रह गए हैं।

हर एक काम का दुश्वार (नहीं) है आसां होना !

प्रकाश पुरोहित

तीसरी मंजिल का दो बैडरूम-किचन-हॉल का यह छोटा-सा फ्लैट है, जहां सुबह से कुछ हलचल नजर आ रही है। दोपहर बारह बजते-बजते करीब बीस-पच्चीस लोग इस फ्लैट में इधर-उधर पसर जाते हैं। बैठक के बीचोबीच मंडपनुमा कुछ सादगी से खड़ा है, तभी दूल्हा-दुल्हन आ जाते हैं, अंदर कमरे से, सभी ताली बजाते स्वागत-शोर करते हैं। पंडित बैठे हैं और रस्म शुरू होती है। सारी रस्में फौरी तौर पर पूरी होती हैं। लगभग घंटे भर में यह पूरा हो जाता है।

दरअसल, यह शादी है, बचपन के उन दोस्तों की, जो स्कूल के जमाने से साथ रहे। वैसे अभी भी साथ हैं, लेकिन परिवार का मन है कि शादी जैसा कुछ हो जाए। दोनों मुश्किल से तैयार होते हैं। उन्हें ना शादी से परहेज है और ना उसके बगैर साथ रहने में, लेकिन परिवार की खुशी के लिए तैयार हो जाते हैं, मगर उनकी शर्त यही है कि 'बहारों फूल बरसाओ' जैसा कुछ नहीं होगा, ना ही 'भेज रहे हैं स्नेह-निमंत्रण प्रियवर तुम्हें बुलाने को', जैसे गली-गली, द्वारे-द्वारे कार्ड ही बांटे जाएंगे। बस बेहद नजदीकी यानी दोनों परिवार के कुछ सदस्य... और दोनों के दोस्त, जो बचपन से साथ हैं। कुल जमा यही मजमा!

कुछ भी अतिरिक्त इंतजाम नहीं, जिसे, जहां जगह मिली बैठ गया। हलका नाश्ता यानी खमण, समोसे और ऐसा ही कुछ। बिल्डिंग के ठीक नीचे तलघर में भोजन बन रहा है- आलू का साग, पूड़ी, दहीबड़े और कचोरी... एकाध कुछ और। लीजिये हो गया रिसेप्शन-भोज तैयार। बीच-बीच में कुछ ठंडा भी, कोई देने वाला नहीं, चाहिए तो उसी तरह उठा लें, जैसे हम अपने घर में करते हैं। कोई मेहमान नहीं, कोई मेजबान नहीं!

हां, दोनों यानी वर-वधू ने खुद को इस तरह तैयार किया था कि समझ आ जाए कि ये ही दूल्हा-दुल्हन हैं। अब शुरू होता है इस शादी का सबसे रोचक हिस्सा। जैसे ही पंडित ने 'वचन' बोलने को कहा तो वर महाशय ने हाथ से लिखे सात वचन पढ़ने शुरू कर दिए। पंडितजी मुंह तक रहे थे कि यह क्या है भाई। बाद में उन्होंने भी तारीफ की 'बदलते समय के हिसाब से हमें बदलना होगा। हर एक के लिए एक तरह के वचन कब तक। कुछ अपनी पसंद और जरूरत के हिसाब से भी तो होने चाहिए।'

लगा कि वचन कार्यक्रम सम्पन्न हो गया, तभी कन्या ने भी अपने मोबाइल से पढ़ना शुरू किया- 'मैं, वचन देती हूं कि अपनी हेल्थ और फिटनेस का हमेशा ध्यान रखूंगी और हर दिन खुद को एक बेटर वर्जन बनने की कोशिश करूंगी। मैं वचन देती हूं कि लाइफ में हर हाई और लो, सक्सेस और फेलियर, हेल्थ और सिकनेस, खुशी और दुःख, हर फेज में बिना शर्त एक ही तरह से तेरे साथ खड़ी रहूंगी...' और ऐसे ही पूरे सात वचन। सबसे खूबसूरत हिस्सा यह रहा कि हर बार 'तेरे, तेरा, तेरी' ही बोला गया, जैसे आम जीवन में, गुजिस्ता बरसों में बोला जाता रहा है। कोई ओढ़ी हुई औपचारिकता नहीं। ''हम हमेशा यही तो बोलते रहे हैं, फिर आज के लिए बदलाव क्यों! यह शब्द स्वाभाविक ढंग से निकलता है तो अपनापन लगता है।''

यहां ना बाजा है, ना डीजे, बस ढपली थी.... जो मंत्र के साथ धीमे से बज रही थी... और एक ढोल, जो कभी-कभी बजता रहा। लीजिए सा'ब... हो गई शादी! दूल्हा-दुल्हन खुद चल कर सभी से मिल रहे हैं और वैसे ही बातें कर रहे हैं, जैसे चौराहे पर या कहीं दावत में मिल जाते हैं या घर पर करते हैं। सभी अपनी-अपनी प्लेट उठाते हैं और खाना शुरू, जैसे कि घर में होता है। ना कुछ लेना, ना देना। खाली हाथ आए थे और... नहीं-नहीं... खाली हाथ जाएंगे तो नहीं, क्योंकि वर-वधू ने सभी के लिए छोटे से गमले में नन्हा-सा पौधा लगा कर भेंट किया है। ''इसे ही पानी-खाद देते रहें, हम खुश रहेंगे।'' कुल चार घंटे में यह शादी हुई, तब वर-वधू ने सभी को यानी दोनों तरफ के परिवार और दोस्तों को विदा किया। नीचे उतरकर ऊपर देखा तो दोनों हाथ हिला रहे थे। अब तक लड़की विदाई देखी है, पहली बार पिरवार को विदा होते देखरहे थे!

आज के दौर में, जब दिखावे का इतना नशा है कि शादी में फूंके गए धन को शान की तरह बखान किया जाता है कि वेन्यु ही आठ या अठारह लाख का था और खाने में इतने आयटम थे कि बस, पूछिए मत! इन सब फिजूलखर्चों के बीच मेहमान यह भी याद नहीं रख पाते हैं कि किसकी शादी में आए थे। खाने और इंतजाम की इतनी तारीफ करवाई जाती है कि दूल्हा-दुल्हन की तो याद भी नहीं आती है और उन्हें भी कहां याद रहता है कि कौन आया और कौन नहीं। शादी में भीड़भाड़ जरूरी है।

पिछले हफ्ते की इस मिसाल सादगी वाली शादी का जिक्र इसलिए कि बदलाव नए बच्चों से ही संभव है और यदि सलीके से किये जाएं तो औरों को भी ऐसा ही कुछ सादा करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। वर-वधू की वचन-लिस्ट यहां हाजिर है, यदि कभी जरूरत हो तो काम आएगी, लिस्ट बांचिए और वर यानी रोहित मिश्रा और कन्या यानी चानी (नामी चित्रकार दम्पती प्रदीप कनिक-मंशा प्रदीप की बेटी) के सुखी जीवन की कामना करें!

प्रेम विवाह: बढ़ते अलगाव का बदलता सामाजिक सच

'रिश्ते टूटते नहीं, धीरे-धीरे संवाद की कमी से बिखरते हैं।'

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

शाम के सात बजे थे। परिवार न्यायालय के बाहर लगभग तीस वर्ष की एक युवती और उसके साथ खड़ा युवक चुपचाप अपनी-अपनी फाइलें पकड़े हुए थे। पाँच वर्ष पहले इन्हीं दोनों ने घरवालों के विरोध के बावजूद प्रेम विवाह किया था । उस दिन वे पकड़े हुए थे। पाँच वर्ष पहले इन्हीं दोनों ने घरवालों के विरोध के बावजूद प्रेम विवाह किया था। उस दिन वे एक-दूसरे का हाथ थामे यह विश्वास दिला रहे थे कि उनका प्यार हर मुश्किल पर भारी पड़ेगा। आज वही दोनों आमने-सामने खड़े थे, लेकिन आँखें एक-दूसरे से नहीं मिल रही थीं। न्यायालय से बाहर निकलते समय युवती ने धीमे से कहा, काश! हमने एक-दूसरे को समझने में उतनी मेहनत की होती, जितनी एक-दूसरे को पाने में की थी।'' यह केवल एक दंपति की कहानी नहीं, बल्कि बदलते समाज की एक सच्चाई है। आज प्रेम विवाह पहले की तुलना में कहीं अधिक हो रहे हैं, लेकिन उनके साथ-साथ अलगाव और तलाक के मामले भी बढ रहे हैं। प्रश्न यह नहीं है कि प्रेम विवाह सफ्ल होते हैं या असफ्ल, बल्कि यह है कि प्रेम से शुरू हुआ रिश्ता विवाह के बाद किन कारणों से कमजोर पड़ने लगता है। प्रेम और विवाह दो अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। प्रेम भावनाओं से जन्म लेता है, जबकि विवाह जिम्मेदारियों, धैर्य और साझेदारी से आगे बढ़ता है। प्रेम के दिनों में साथी की मुस्कान दिखाई देती है, लेकिन विवाह के बाद उसके साथ जीवन की चुनौतियाँ भी दिखाई देती हैं। यहीं से रिश्ते की असली परीक्षा शुरू होती है। जबकि हर समझौता आत्मसमर्पण नहीं होता। स्वस्थ रिश्तों में किया गया समझौता दरअसल प्रेम, सम्मान और परिपक्वता का परिचायक होता है।

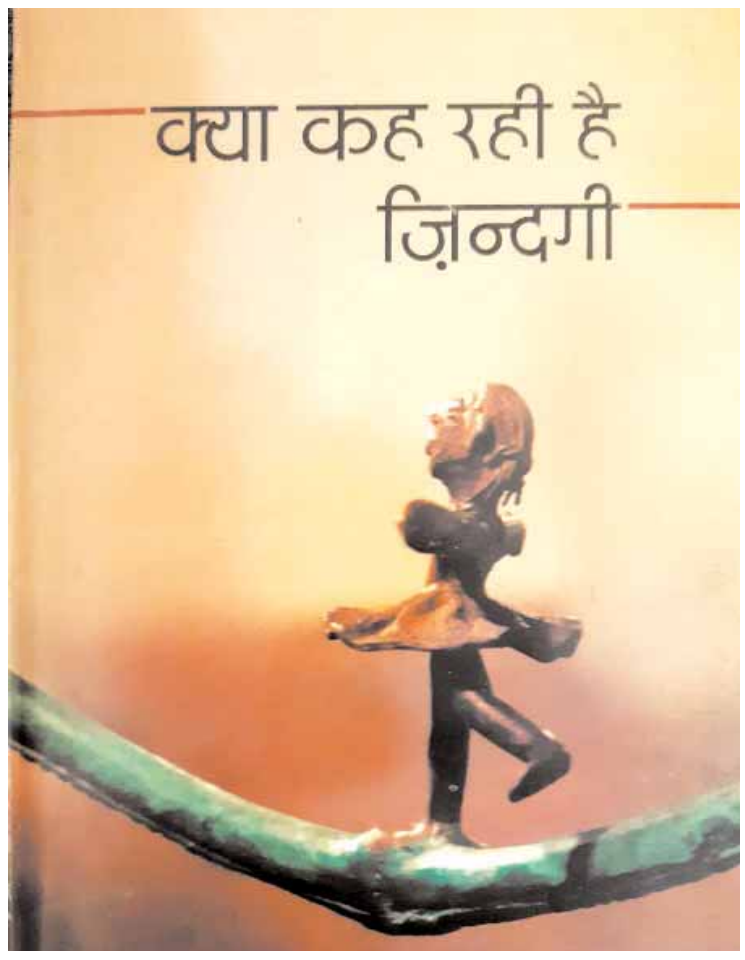

हालाँकि इस विषय का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पहले अनेक लोग सामाजिक दबाव, आर्थिक निर्भरता या परिवार की प्रतिष्ठा के कारण असुखद और अपमानजनक विवाह भी जीवनभर निभाते रहते थे। आज शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने विशेषकर महिलाओं को अन्याय, हिंसा और मानसिक प्रताड़ना के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस दिया है। इसलिए हर तलाक को पारिवारिक मूल्यों का पतन कहना भी उचित नहीं होगा। जहाँ सम्मान और सुरक्षा समाप्त हो जाए, वहाँ अलग होना कभी-कभी साहस और आत्मसम्मान का निर्णय भी होता है।

डिजिटल युग ने रिश्तों को एक नई चुनौती दी है। मोबाइल और सोशल मीडिया ने लोगों को दुनिया से जोड़ा है, लेकिन कई बार अपने ही घर के लोगों से दूर भी कर दिया है। एक ही कमरे में बैठे दो लोग घंटों मोबाइल पर व्यस्त रहते हैं, पर एक-दूसरे से कुछ मिनट भी खुलकर बात नहीं कर पाते। सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली सजी-सँवरी जिंदगी वास्तविक जीवन से तुलना का कारण बनती है। यह तुलना असंतोष, संदेह और मानसिक दूरी को जन्म देती है। इसके साथ ही आज का जीवन पहले से अधिक व्यस्त और प्रतिस्पर्धी हो गया है। करियर, आर्थिक दबाव और समय की कमी के कारण पति-पत्नी के पास एक-दूसरे के लिए समय कम होता जा रहा है। संवाद की कमी रिश्तों का सबसे बड़ा संकट बनती जा रही है। जब बातें दिल में दबने लगती हैं, तब दूरियाँ बढ़ने लगती हैं।

एक और कारण है -रिश्तों के प्रति बदलती सोच। आज की पीढ़ी समझौते को कई बार अपनी हार मान बैठती है। जबकि हर समझौता आत्मसमर्पण नहीं होता। स्वस्थ रिश्तों में किया गया समझौता दरअसल प्रेम, सम्मान और परिपक्वता का परिचायक होता है।

समाधान प्रेम विवाह या पारंपरिक विवाह की बहस में नहीं, बल्कि रिश्तों की गुणवत्ता में है। युवाओं को करियर के साथ-साथ भावनात्मक परिपक्वता, संवाद कौशल, धैर्य और संबंधों को निभाने की कला भी सीखनी होगी। परिवारों को भी बच्चों पर केवल सफ्लता का दबाव नहीं, बल्कि संवेदनशील और पारिवारिक मूल्यों का संस्कार देना होगा।

प्रेम यदि केवल आकर्षण है तो उसका जीवन छोटा होगा; लेकिन यदि उसमें विश्वास, सम्मान, धैर्य, क्षमा और जिम्मेदारी शामिल है, तो वही प्रेम विवाह को जीवनभर का साथ बना सकता है। आज आवश्यकता इस बात की नहीं कि हम प्रेम विवाह और पारंपरिक विवाह की तुलना करें, बल्कि यह समझें कि किसी भी रिश्ते की सफ्लता उसकी शुरुआत से नहीं, बल्कि उसे निभाने की निष्ठा से तय होती है।

आखिरकार, विवाह की सबसे सुंदर परिभाषा यही है-दो लोग हर दिन एक-दूसरे को फिर से चुनें, फिर से समझें और हर परिस्थिति में साथ चलने का निर्णय लें। बस्स आज तो यही कह रही है ज़िंदगी .....

शिक्षा यात्रा...

फोटो: बंसीलाल परमार

कैक्टस-फूल खिलने की उम्मीद पर !

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

इस साल रोहन कनावड़े की 'कैक्टस पियर्स' (मराठी में साबर बोंडा और हिंदी में नागफनी का फल) से ज्यादा सुकून देने वाली फिल्म शायद ही मिले। यह प्रेम-कहानी है, जिसकी धीमी और सहज लय यूं गले लगाती है कि छोड़ने का मन नहीं करता।

निर्देशक रोहन की खुद की कहानी पर बनी फिल्म सुकून भरी रफ्तार से आगे बढ़ती है, जो कभी-कभी रोमांचक मोड़ लेती है। शोक और उदासी से शुरू होने वाली महाराष्ट्र के गांव की समलैंगिक कहानी आखिर में खास हो जाती है, जिसमें किरदार जब सच्चाई से बचने की कोशिश करते हैं और शुरू होता है भावनाओं और उलझे धागों का जंजाल।

कहानी है ऐसे प्यार की, जिसे मनाही थी या खुलकर माना नहीं या शायद जो मना था और छिपाया था। भावनाओं के उस उभार की, जो परिवार, रुतबे और क्लास के दमन को बताता है। आनंद (भूषण मनोज, 30) मुंबई के कॉल-सेंटर में काम करता है। पिता की मौत के बाद गांव लौटना पड़ता है, जहां उसे शोक के दस दिन बिताने हैं। पिता चाहते थे कि पत्नी सुमन (जयश्री जगताप) अच्छा खाना बनाए। कनावड़े ने इसकी अहमियत को चतुराई से दिखाया है, जिसमें आनंद के बूढ़े और अंधे दादाजी याद करते हैं कि उन्होंने आखिर क्यों सुमन जैसी कम हैसियत और कम पढ़ी-लिखी महिला से शादी करने दी थी।

आनंद की मुलाकात बचपन के दोस्त बाल्या (सूरज सुमन) से होती है। बाल्या बकरियां चराता है। परिवार की सारी जमा-पूंजी बहन की शादी में खर्च हो चुकी है। बाल्या के मन में आनंद के लिए वैसी ही भावनाएं हैं जो आनंद में उसके लिए हैं। बाल्या पर शादी का दबाव है, समाज जानता है कि वह अकेला क्यों है (भले ही इसे पूरी तरह न मानते हों)।

दिखाया है कि कैसे रोजमर्रा के नियम भी सलाखों जैसे बन सकते हैं। ये सलाखें पास-पास लगा दी जाएं तो जेल बन जाती है। बाल्या और आनंद यादें ताजा करते हैं और साथ मिलकर खाए फल और काटे पुराने पेड़ के बारे में बात करते हैं तो इतिहास की तस्वीर उभरती है, हालांकि इसे धुंधला ही रखा जाता है।

कनावड़े न तो गांवों का रोमांस बताते हैं और न ही उन्हें राजनीतिक। परंपरा, संस्कृति और बाल्या से पता चलता है जरूरत युवाओं पर नियमों को मानने का दबाव डालती हैं। उदारता और नेकनीयती के कारण दिल को छू लेने वाली फिल्म है, जो न केवल आनंद के माता-पिता या प्रेमिका, बल्कि रिश्तेदारों पर भी है।

'कैक्टस पीयर्स' उन अनुभवों का दायरा बढ़ा देती है, जिन्हें क्वीर इंसान के लिए अब तक दायरे में रखा था। नतीजा शालीनता और नजाकत से भरपूर है। 'कैक्टस पियर्स' (नागफनी के फल) बाल्या की तरफ से आनंद के लिए अनकहा तोहफा हैं। उसने पहले ही उनके कांटे हटा दिए हैं। दिल को छू लेने वाला काम है, जो दिखाता है इनकी ज़िंदगी के बाकी कांटे आसानी से नहीं हटाए जा सकते। 'नेटफ्लिक्स' पर है, लेकिन लंदन में इसके शो के सारे टिकट बिक चुके हैं।